ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

कार्तिक-मार्गशीर्ष संवत् नानकशाही 554 नवंबर २०२२ वर्ष 16 अंक 3

गुरुद्वारा प्रकाश-स्थान श्री गुरु नानक देव जी,
श्री ननकाणा साहिब, पाकिस्तान

गुरुद्वारा साहिब सच्चा सौदा, चूहड़काणा, शेखूपुरा (पाकिस्तान)

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

कार्तिक-मार्गशीर्ष, संवत् नानकशाही 554
वर्ष 16 अंक 3 नवंबर 2022

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी : जपु जी साहिब . . . 7
-डॉ. परमजीत कौर

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी और स्वास्थ्य समस्याएँ 13
-डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति

प्रेम के पुंज : श्री गुरु नानक देव जी 18
-बीबी संदीप कौर

धरम हेत साका जिनि कीआ 22
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

बहु काल भयो सुलतानपुरे . . . 29
- बीबी गुरमीत कौर

ई भै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥ 34
-डॉ. मनजीत कौर

भक्त नामदेव जी : नाम-सिमरन और सहज-साधना . . . 39
-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल

लासानी शहादत के दीप : बाबा दीप सिंघ जी 43
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'

खबरनामा 46

गुरबाणी विचार

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥
नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में मार्गशीर्ष महीने में ऋतु और वातावरण के विशेष प्रसंग में जीव-स्त्री को पति-परमेश्वर प्रभु के नाम के साथ जुड़ कर मानव-जीवन सफल करने के लिए मार्ग दर्शाते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि मार्गशीर्ष महीने की ठंडी-मीठी ऋतु में जो जीव-स्त्रियां प्रिय पति-परमेश्वर के संग बैठी होती हैं, जिनको मालिक ने अपने साथ मिला लिया होता है, उनकी प्रशंसा मैं क्या बयान करूं ? उनकी प्रशंसा वर्णन से बाहर है। उनका तन और मन अथवा उनका समूचा अस्तित्व ही परमात्मा व अच्छे सतसंगियों के संग से उल्लासमयी हो जाता है, लेकिन जो अच्छे जनों की संगत से बाहर रहती हैं वे जीव-स्त्रियां अकेली पड़ जाती हैं अर्थात् मालिक के प्यार से वंचित रह जाती हैं। उनके सांसारिक दुख कभी निवृत्त नहीं होते, बल्कि वे यमों के वश पड़ जाती हैं।

गुरु जी पुन: नेक जीव-स्त्रियों का उल्लेख करते हुए फरमान करते हैं कि जिन जीव-स्त्रियों ने मार्गशीर्ष महीने की ठंडी-मीठी ऋतु में अपने पति-परमेश्वर को स्मरण किया वे सदैव सचेत होती हैं अर्थात् सांसारिक दुख मन पर भारी नहीं होने देती। उन्हीं जीव-स्त्रियों के गले में गुण रूपी रत्न, जवाहर, लाल शोभा दे रहे होते हैं।

सतिगुरु जी का कथन है कि मैं तो ऐसे नेक जनों की चरण-धूलि चाहता हूं जो प्रभु के द्वार पर, उसकी शरण में आ गए हैं। मार्गशीर्ष महीने में यदि प्रभु की सच्ची आराधना की हो तो जीव को बार-बार जन्म नहीं लेना पड़ता। उसका जन्म-मरण का दुख कट जाता है।

संपादकीय

. . . गुरमुखि पंथ वडा परतापै

जब मानव-जीवन में से शुभ कर्म समाप्त हो जाएं तो समाज में नफ़रत, झगड़ा, पाप, पाखंड, जात-पाँत के भेदभाव, खुदगर्जी, धक्केशाही, भ्रष्टाचार आदि फैल जात है। श्री गुरु नानक पातशाह जी के समय भारतीय समाज की नाज़ुक हालत बनी हुई थी, जिसे भाई गुरदास जी ने *''करम भ्रिसटि सभि भई लोकाई''* कहकर दर्शाया है। धर्म को शुभ कर्मों का स्रोत माना गया है। शुभ कर्म मानवता में से तब खत्म हो जाते हैं जब धर्म का ज्ञान धूमिल होकर मानव-जीवन को प्रकाशमान करने के योग्य न रहे। धर्म के ज्ञान का केन्द्र परमात्मा है और जब तक परमात्मा का स्वरूप और गुण स्पष्ट न हों तब तक धर्म का ज्ञान जात-पाँत, वर्ण-विभाजन का कारण बनकर धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक अधोगति का कारण बना रहता है। यही कारण था कि श्री गुरु नानक पातशाह के आगमन से सर्वश्रेष्ठ व प्राचीन संस्कृति वाले माने जाते धर्म और उनके धर्म-ग्रंथ तो मौजूद थे, किंतु खलक रसातल की ओर बढ़ती जा रही थी। तब इस ग्लानि से मुक्ति का मात्र एक ही साधन शेष रह गया था :

सतिगुर बाझु न बुझीऐ जिचरु धरे न प्रभु अवतारा। (वार १:१७)

अकाल पुरख परमात्मा ने श्री गुरु नानक देव जी को जगत में भेजा। श्री गुरु नानक देव जी ने जनमानस की हाहाकार सुनी और जनमानस का उद्धार करने के लिए अपने मिशन में भाई मरदाना जी को अपने साथ ले लिया। गुरु जी जब मानवीय अनेकता में प्रभु की एकता का प्रचार करते, परस्पर मानव प्रेम का संदेश देते हुए, 'किरत करो, नाम जपो, वंड छको' का उपदेश करते हुए बाणी उच्चारण करते तब उनके साथ भाई मरदाना जी रबाब बजाते थे।

जनसाधारण के उद्धार हेतु श्री गुरु नानक पातशाह द्वारा चलाए गए मिशन को भाई गुरदास जी ने नानक निर्मल पंथ और तेज परताप वाला *''गुरमुखि पंथ वडा परतापै''* कहा है। श्री गुरु नानक पातशाह ने निर्मल पंथ के महल को दो स्तंभ 'गुरु-संगत' और 'बाणी' के सहारे पर टिकाया। भाई गुरदास जी नानक निर्मल पंथ या गुरमुख पंथ की विलक्षणता को दर्शाते हुए लिखते हैं कि गुरु जी ने चार वर्णों में विभक्त मानवता को एक वर्ण अर्थात् साधसंगत का रूप दिया, जिसके तहत सदियों बाद भारतवासियों को एक साथ बैठने की तहज़ीब हासिल हुई। छः भारतीय दर्शनों (न्याय, सांख, वेदांत, योग, वैशेषिक, मीमांसा) के मुकाबले गुरमति दर्शन (गुरु साहिबान की विचारधारा) सूरज

की भांति स्थापित हुई। भारतीय सभ्याचार में जो अज्ञानता का अंधकार छः दर्शन दूर नहीं कर पाए वह गुरमति दर्शन ने कर दिखाया। योगियों के बारह पंथों को मिटा कर गुरमुख पंथ तेज प्रताप वाला पंथ बना। यह नानक निर्मल पंथ (सिक्ख धर्म) वेदों-कतेबों से विलक्षण एवं अद्वितीय धर्म है, क्योंकि यह कर्मकांडों का खंडन करके शबद द्वारा परमात्मा की भक्ति का मार्ग दर्शाता है :

चारि वरनि इक वरनि करि वरन अवरन साधसंगु जापै।
छिअ रुती छिअ दरसना गुरमुखि दरसनु सूरजु थापै।
बारह पंथ मिटाइ कै गुरमुखि पंथ वडा परतापै।
वेद कतेबहु बाहरा अनहद सबदु अंगम अलापै। *(वार २३:१९)*

इष्ट की स्पष्टता के बिना भक्ति सार्थक नहीं हो सकती। मानवता के समक्ष आज तक किसी ने परमात्मा का सही स्वरूप प्रकट ही नहीं किया था। श्री गुरु नानक पातशाह ने मूल-मंत्र द्वारा परमात्मा के गुणों के बारे में बताते हुए कहा है कि इन गुणों को याद कर हृदय में धारण करने से शुभ गुणों के धारक बना जा सकता है। *''एक महि सरब सरब महि एका''* द्वारा बताया कि समस्त सृष्टि एक निरंकार के अंदर समाई हुई है और निरंकार सबके अंदर समाया हुआ है।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में स्थापित किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय गुरु-संगत ने खालसा पंथ का रूप धारण किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय श्री गुरु नानक पातशाह द्वारा बख्शिश 'गुरु-संगत' तथा 'बाणी' के आशय को 'गुरु-ग्रंथ' और 'गुरु-पंथ' के रूप में गुरुआई बख्शिश कर सिक्खों को इसके अधीन किया। कुछ समय बाद जब सिक्खों में सिक्खी जीवन-जाच के प्रति कुछ शिथिलता आई तो गुरु-पंथ ने गुरुआई की युक्ति का अधिकार प्रयोग करते हुए गुरबाणी, गुरमति सिद्धांतों और गुरु-इतिहास का गहन अध्ययन कर 'सिक्ख रहित मर्यादा' को निर्धारित किया। 'सिक्ख रहित मर्यादा' हम पर गुरु-पंथ का बहुत बड़ा उपकार है। यह *''सोई करे जोई मनि भावै''* वाली मनमुख वृत्ति को त्यागकर *''पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै''* वाली सशक्त गुरमति जीवन-जाच की ओर प्रेरित करती है। जिस तरह श्री गुरु नानक पातशाह ने अपने समय में समाज में आ चुकी गिरावट को गुरबाणी के क्रांतिकारी संदेश द्वारा दूर किया था, उसी तरह आज हमने अपनी कमजोरियों को खुद देखकर गुरबाणी को जीवन में धारण करते हुए शुभ कर्मों के मालिक बनना है।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी : जपु जी साहिब तथा व्यवहारिक जीवन

*-डॉ. परमजीत कौर**

जपु जी साहिब श्री गुरु नानक देव जी की बाणी है तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सबसे पहले दर्ज है। नित्यनेम की बाणियों में भी इसका विशेष महत्त्व है। गुरसिक्ख परिवारों में जब बालक अच्छी तरह बोलना सीखता है, तब उसको मूल-मन्त्र का पाठ याद करवाया जाता है। इसके बाद जपु जी साहिब की पउड़ियों का प्रारंभ सहज स्वभाव ही हो जाता है। जपु जी साहिब का हमारे नित्यप्रति के व्यवहारिक जीवन के साथ गहरा सम्बंध है। इस बाणी से दिशा-निर्देश प्राप्त कर मनुष्य के जीवन से अज्ञान का अन्धकार दूर हो जाता है। वास्तव में जपु जी साहिब की पउड़ियां मानव जीवन-राह की पउड़ियां हैं, जो ऐसे नियमों को दृढ़ करवाती हैं, जो जीवन को ऊँचा, निर्मल तथा अमृतमयी बना देते हैं। जो जीव जपु जी साहिब की सारी पउड़ियों तक स्वयं को सफलतापूर्वक ले जाता है वह जीवन में ऊँचाई के उस शिखर तक पहुंच जाता है, जहां आत्मिक आनंद ही आनंद है।

सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े पहिरहि जाइ मनुख॥

(पन्ना १४९)

जीवन सुख तथा दुख का सुमेल है। दुख से घबरा कर मनुष्य पग-पग पर अस्थिर हो जाता है, डगमगा जाता है। अज्ञानता के अधीन हुआ, परमात्मा पर पूर्ण विश्वास न करता हुआ मनुष्य अन्य आश्रयों की खोज करने लगता है तथा जीवन-मनोरथ को भूल जाता है।

जपु जी साहिब के मंगलाचरण में सर्वप्रथम यह दृढ़ करवाया जाता है कि परमात्मा एक है। उसका नाम सत्य है (सति नामु)। उसके समान अन्य कोई नहीं है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की अन्य बाणी में भी इसी विचार को दृढ़ करवाया गया है :

— साहिबु मेरा एको है॥

एको है भाई एको है॥ (पन्ना ३५०)

— एकम एकंकारु निराला॥

अमरु अजोनी जाति न जाला॥ (पन्ना ८३८)

जो परमात्मा का आश्रय लेता है, वह डगमगाता नहीं। परमात्मा 'करता पुरखु' है, सब कुछ करने वाला है :

तूं करता सचिआरु मैडा सांई॥ (पन्ना ११)

परमेश्वर के हुक्म के बिना कुछ नहीं होता। मनुष्य अज्ञानता के कारण 'यह मैं करता हूं', 'यह मैंने किया है' के अहं में रहता है। यह अहं ही उसे परमात्मा के कर्त्तापन को समझने नहीं देता। वह प्रभु से दूर हो जाता है। परमात्मा 'निरभउ' (निर्भय) है। 'निरभउ' की आराधना करने से

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)-१३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

सारे भय समाप्त हो जाते हैं :

निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ (पन्ना २९३)

प्रभु 'निरवैरु' (वैर-रहित) है। वह सबकी एक समान संभाल करता है, किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं करता है। जीव अपने कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा फल प्राप्त करता है। प्रभु 'अकाल मूरति' (काल से रहित स्वरूप वाला), 'अजूनी' (जन्म-मरण से रहित) तथा 'सैभं' (स्वयं से प्रकाशित, उदित) प्रकाश-स्वरूप है। प्रभु की प्राप्ति तभी होती है जब गुरु की कृपा हो जाए, 'गुर प्रसादि' प्राप्त हो जाए।

आज तीर्थ, व्रत आदि हमारी जिंदगी का अटूट हिस्सा बन गये हैं। हम इन्हें ही अपने कल्याण का साधन समझ बैठे हैं। श्री गुरु नानक देव जी जपु जी साहिब में समझाते हैं कि मात्र तीर्थ-स्नान आदि से मन पवित्र नहीं होता। मात्र मौन रखने से मन भटकना छोड़कर प्रभु संग नहीं जुड़ जाता। जुबान बेशक चुप रहती हो, मगर यह जरूरी नहीं कि मन भी चुप रहे, मन में कोई विचार न आए। मन तो इधर-उधर दौड़ता ही रहता है। अनेक पदार्थों के रस से तृष्णा की भूख समाप्त नहीं होती। इसी तरह अन्य कई प्रकार की चतुराइयां तथा बुद्धिमता प्रभु के साथ सामीप्य बनाने में सहायक नहीं होती :

— सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥
(पन्ना १)
— तीरथि नावा जे तिसु भावा
विणु भाणे कि नाइ करी ॥ (पन्ना २)

जीवन में आई परेशानियों से घबरा कर जीव असत्य के मार्ग पर चल पड़ता है। उसके मन में अनेक प्रकार की शंकायें पैदा हो जाती हैं। वह कर्मकाण्ड के चक्कर में पड़ जाता है, लेकिन ये कर्म उसके मन को शांत नहीं करते। इन कर्मों से वह 'सचिआर' (सत्यवादी) नहीं बनता। नाम-सिमरन के बिना ये कर्म उसके अहं को ही बढ़ाते हैं। श्री गुरु नानक देव जी 'सचिआर' बनने का तरीका बताते हैं :

हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥
(पन्ना १)

मनुष्य एक परमात्मा का आश्रय ले, प्रभु के हुक्म में चले, उसकी रज़ा को माने, तो असत्य की दीवार टूट सकती है। अहं ही असत्य की दीवार है, जो परमेश्वर से अलग अस्तित्व के भ्रम में डालकर 'सचिआर' नहीं बनने देती। जो परमात्मा के हुक्म को समझ लेता है वह अहंकार नहीं करता :

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

प्रभु-प्रेम में लीन इंसान ही 'हुकमि रजाई' चल सकता है। परमात्मा जो कुछ करता है, वह उसको परमात्मा की प्रसन्नता मान कर संतुष्ट रहता है। *''तेरा कीआ मीठा लागै''* ही उसकी ज़िंदगी का आधार बन जाता है। प्रभु से प्रेम करने वाला, प्रभु की रज़ा में चलने वाला प्रभु के गुणों को धारण करने का यत्न करता है तथा 'सचिआर'

बन जाता है। इसके लिए सांसारिक पदार्थों या धन आदि की आवश्यकता नहीं होती। अमृत वेला में उठकर प्रभु के गुणों की विचार करनी, नाम जपना ही परमात्मा के आगे रखी जाने वाली भेंट है। जो भी यह भेंट रखता है, वह प्रभु का प्रेम तथा उसकी प्रसन्नता प्राप्त कर लेता है :

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥
अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥
(पन्ना २)

परमात्मा सत्य स्वरूप है। प्रेम ही उसकी बोली है। जो हृदय में प्रेम रखकर प्रभु के गुण गाता है, सुनता है तथा उस पर विचार करता है, वह परमात्मा से दूर होने का दुख दूर कर सुख घर ले जाता है। वो सुख, जो प्रभु पर भरोसा करके, उसको अपना आश्रय मानकर, अपने समीप समझ कर प्राप्त होता है :

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ *(पन्ना २)*

यह समझ गुरु के उपदेश द्वारा प्राप्त होती है। मनुष्य के दुख का कारण ही यह है कि वह दातार प्रभु को भूलकर उसके द्वारा दी गयी वस्तुओं से प्रेम करता है :

दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥ *(पन्ना ६७६)*

जो गुरु की शिक्षा पर चलकर नाम-सिमरन करता है, उसकी बुद्धि निर्मल हो जाती है। वह अन्तरात्मा में स्नान करता है तथा गुण रूपी रत्न प्राप्त कर लेता है :

मति विचि रतन जवाहर माणिक
जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई ॥ *(पन्ना २)*

परमात्मा के गुणों का गायन करने वाले, सुनने वाले, मनन करने वाले, हुक्म में चलने वाले तथा हृदय में परमात्मा का प्रेम रखने वाले 'पंच' ही संसार में सम्मान प्राप्त करते हैं तथा मानव-जीवन के मनोरथ को पूरा करते हैं :

पंच परवाण पंच परधानु ॥
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥
पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ *(पन्ना ३)*

ऐसे मनुष्य 'सचिआर' बन जाते हैं। नाम-सिमरन का धर्म उनकी जिंदगी का आधार बन जाता है, जिस कारण वे दयालु हो जाते हैं, जीवन में संतुष्ट रहते हैं। दया धर्म का मूल है तथा धर्म से संतोष पैदा होता है :

धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ *(पन्ना ३)*

संसार में रहते हुए, कारबार करते हुए मन में यह प्रश्न उठता है कि बहुत सारे लोग अच्छे हैं, जप, तप, नेकी करते हैं, असंख्य पापी पाप करते हैं, मूर्ख हैं, दूसरों का बुरा सोचते हैं। इन सबका क्या कारण है? क्या वे भी 'सचिआर' बन सकते हैं? जपु जी साहिब में ऐसे जीवों की समस्या का भी समाधान किया गया है :

भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥
पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ (पन्ना ४)

मनुष्य अपने किए गए कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त करता है, मगर गुरमति के अनुसार कर्म अमिट नहीं हैं। कर्मों के अनुसार प्रभु द्वारा लिखा हुआ लेख अमिट है। कर्म फल का कारण हैं। फल प्रभु के हुक्म के अनुसार ही मिलता है। मनुष्य परमात्मा के नाम का सिमरन करता हुआ अपने मन को निर्मल करके, अवगुणों को दूर करके प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है। प्रभु दयालु है, बख्शनहार है, क्षमा कर देता है। प्रभु का नाम मन की मैल को दूर कर देता है :

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥ (पन्ना २६३)

जैसे-जैसे चित्त नाम में लगता है, जीव गुरु-शबद के अनुसार, गुरमति के अनुसार अपने जीवन को ढालता है, बनाता है। मन में प्रभु-प्रेम पैदा होता है तथा मन पवित्र हो जाता है। तीर्थ-यात्रा, दान, तप आदि कर्मों से संसार में थोड़ा-बहुत मान-सम्मान तो मिल जाता है, लेकिन नाम-सिमरन के बिना इन कर्मों से मन की मैल दूर नहीं होती। नाम के साथ ये कर्म सहायक बन जाते हैं, जबकि नाम के बिना हउमै (अहं) बढ़ाते हैं :

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥
जे को पावै तिल का मानु ॥
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ (पन्ना ४)

यह याद रखना चाहिए कि इस जीवन में मनुष्य को जो कुछ मिलता है, परमात्मा की कृपा से मिलता है :

नानक नदरी करमी दाति ॥ (पन्ना ५)

प्रभु सब कुछ देने वाला सर्वसामर्थ्यवान है :

जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ (पन्ना ९)

मनुष्य जितनी देर प्रभु से दूर रहता है, वह मात्र लेता रहता है, लेकर जुबान से फिर जाता है अर्थात् कभी कृतज्ञता प्रकट नहीं करता। उसको सन्तोष नहीं मिलता। जैसे-जैसे उसके हृदय में प्रभु-प्रेम जागृत होता है, लेने का स्वभाव समाप्त होता जाता है, प्रभु द्वारा दिए गए पदार्थों आदि में से जरूरतमंदों की सहायता करने में संकोच नहीं करता, सदैव संतुष्ट रहता है। मूर्ख लेते रहते हैं, लेकिन परमात्मा को देने वाला नहीं मानते। वे अहंकारग्रस्त रहते हैं। प्रभु-दाता देना बंद नहीं करता। यदि कोई दुखी होता है या कभी किसी को कोई कमी, कोई कष्ट आ जाता है तो इसका यह मतलब नहीं है कि परमेश्वर अपनी अप्रसन्नता प्रकट करता है। प्रभु द्वारा दिया गया दुख भी उसकी अमूल्य देन है। दुख जीव को प्रभु के समीप ले आता है, इसलिए दारू बन जाता है :

केते लै लै मुकरु पाहि ॥
केते मूरख खाही खाहि ॥
केतिआ दूख भूख सद मार ॥
एहि भि दाति तेरी दातार ॥ (पन्ना ५)

जब मन देय-पदार्थों से हटकर देने वाले दाता प्रभु की ओर मुड़ जाता है तो हुक्म मानने का

बल पैदा होता है। हुक्म मीठा लगने लगता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों से मुक्ति मिल जाती है :

बंदि खलासी भाणै होइ ॥ *(पन्ना ५)*

इस ऊँचाई तक पहुंचने के लिए मन को जीतना, वश में करना जरूरी है। अक्सर मन डावांडोल हो जाता है। यदि मन पर विजय प्राप्त कर ली जाए तो संसार का माया रूपी मोह प्रभु से वियुक्त नहीं करता। योग-अभ्यास द्वारा प्राप्त ऋद्धियों-सिद्धियों को देखकर उच्च जीवन समझना भूल है। ये सिद्धियाँ तो कभी-कभी प्राप्तकर्त्ता को जीवन-उद्देश्य से भटका देती हैं। योग मत की खिंथा, मुँदरा आदि प्रभु से दूरी को मिटाने में समर्थ नहीं होते। मन में संतोष, मेहनत की कमाई की आदत, मृत्यु को याद रखना, सच्चा-पवित्र आचरण, आपा-भाव न्यौछावर करना, इन सब गुणों को धारण करके ही जीव प्रभु का सामीप्य प्राप्त कर सकता है :

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली
धिआन की करहि बिभूति ॥
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति
डंडा परतीति ॥
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥

(पन्ना ६)

असत्य की दीवार (कूड़ की पालि) से प्रभु-प्राप्ति की उच्च अवस्था तक पहुंचने के लिए सिमरन का आश्रय लेकर आपा-भाव छोड़ना पड़ता है। श्री गुरु नानक देव जी समझाते हैं कि ममत्व त्यागे बिना, अहंकार को छोड़े बिना लाख जिह्वाओं से लाख बार नाम जपने से भी कोई लाभ नहीं होता।

आपा-भाव (मैं-मेरी की भावना) का त्याग किये बिना यह उद्यम चीटियों के आकाश पर पहुंचने के लिए किए गये यत्न के समान है:

इक दू जीभौ लख होहि
लख होवहि लख वीस ॥
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥

(पन्ना ७)

नाम-सिमरन के लिए सहज अवस्था होनी चाहिए। सहज अवस्था परमात्मा की कृपा से प्राप्त होती है। हउमै के अधीन होकर अपने धन या ज्ञान के बल पर कोई मनुष्य इस अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता :

ठाकुरु गाईऐ आतम रंगि ॥ (पन्ना ६८०)

मनुष्य अपने नित्य के जीवन में इन सिद्धान्तों का दृढ़ता से पालन करता हुआ आत्मिक अवस्था के चार खंडों को पार करके 'सचखंड' तक पहुंच सकता है। ये खण्ड हैं— धरम खंड, गिआन खंड, सरम खंड तथा कर्म खंड।

साधारण शब्दों में कह सकते हैं कि जब मनुष्य पर प्रभु की कृपा होती है तो वह पहले संसार की मोह-माया तथा विकारों से मन को हटाने का यत्न करता हुआ स्वयं के बारे में सोचता है, जीवन-उद्देश्य के बारे में विचार करता

है। उसको यह ज्ञान होता है कि वह संसार में धर्म के मार्ग पर चलकर जीवन सफल करने के लिए आया है :

प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥ (पन्ना ४३)

यही 'धरम खंड' है।

जैसे-जैसे यह विचार दृढ़ होता है, अंदर से स्वार्थ की भावना तथा भ्रम दूर होता जाता है, नाम-रस का आनंद आने लगता है, हृदय विशाल तथा दृष्टि उदार हो जाती है, प्रभु की व्यापकता का ज्ञान हो जाता है। यही 'गिआन खंड' है।

'सरम खंड' में मन सुंदर बनना शुरू हो जाता है। चित्तवृत्ति (सुरति) तथा मति ऊँची हो जाती है। सारा संसार एक परिवार लगता है। मन की संकीर्णता समाप्त हो जाती है। सेवा-भावना बढ़ जाती है। मेर-तेर का भेदभाव समाप्त हो जाता है।

'करम खंड' की अवस्था में जीव के अंदर आत्मिक बल पैदा हो जाता है। परमात्मा की अपार कृपा से चित्तवृत्ति (सुरत) हमेशा प्रभु की महिमा, प्रभु के गुण-कीर्तन में लगी रहती है। अपने भीतर तथा बाहर प्रभु की ज्योति का प्रकाश नज़र आता है :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

प्रभु-प्रेम में लीन मनुष्य सदा आनन्दित रहता है। इस उच्च आत्मिक अवस्था को प्राप्त करने के लिए आचरण की पवित्रता, दूसरों की ज्यादती सहने की आदत, धैर्य, सहनशीलता, ऊँची तथा विशाल समझ, प्रभु का भय, सेवा की मेहनत तथा प्रेमपूर्ण हृदय होना जरूरी है :

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥
भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ (पन्ना ८)

जीव अपने किए गए कर्मों के अनुसार ही प्रभु के समीप या दूर हो जाता है। नाम-सिमरन करने वाले जीव अपना जीवन सफल कर लेते हैं।

जपु जी साहिब बाणी सत्य का संदेश देती हुयी मनुष्य को उसके कर्त्तव्य का बोध करवाती है तथा प्रभु के समीप ले जाती है।

वास्तव में जपु जी साहिब के रूप में हमारे पास एक अमूल्य रत्न है, जिससे हम धर्म के साहूकार बन सकते हैं। यदि बाणी में निर्दिष्ट नियमों-उपदेशों के अनुसार जीवन न बनाया जाए तो हमारा नित्य का पाठ करना रत्न को देख-देख कर मात्र बाहरी प्रसन्नता प्राप्त करने के समान है।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी और स्वास्थ्य समस्याएँ

*-डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति**

श्री गुरु नानक देव जी वे महान शख्सियत हैं, जिन्होंने अपने इतिहास के दौर में उस समय की प्रचलित सभी कुरीतियों के ख़िलाफ़ अपने विलक्षण अंदाज़ में आवाज़ बुलंद की। यदि उस समय की कुरीतियों की सूची बनाई जाये तो वे ज़िंदगी के प्रत्येक क्षेत्र— पारिवारिक, व्यवसायिक, राजनीतिक और धार्मिक के साथ जुड़ी हैं। इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी के फलसफे की जीवन-शैली को स्वस्थ, स्वास्थ्यवर्धक और मानवीय जीवन-मूल्यों के साथ जोड़ने वाला जीवन-शास्त्र कहा जा सकता है।

जहाँ तक मानव के मूलभूत प्रसार की बात करें तो शारीरिक, मानसिक स्तर पर आपस में मिलजुल कर रहने के लिए, मानव की मानव के प्रति संवेदनशीलता प्रमुख हैं। श्री गुरु नानक देव जी उस समय की इन प्रसारों से सम्बन्धित अमानवीय तथा असामाजिक रिवायतों को नकारते हैं, साथ ही, मानव ज़िंदगी के लिए क्या उचित है, उस रस की भी निशानदेही करते हैं।

स्वास्थ्य क्या है? यह छोटा-सा शब्द है और बहुसंख्यक लोगों की इसके प्रति समझ भी सीमित है, परन्तु इसका प्रसार बहुत विशाल है। एक आम आदमी शरीर के दुख, दर्द, पीड़ा या रोगों को ही स्वास्थ्य के साथ जुड़ा समझता है। समस्या कब बनती है? जब इसके बारे में विचार करें या किसी से पूछें तब भी यही धारणा होगी कि शरीर स्वस्थ नहीं है। तब भी इस पहलू से बुख़ार, सिर दर्द, पेट ख़राबी, खाँसी की बात ही होती है, जबकि यह समस्या का आधा हिस्सा भी नहीं है।

स्वास्थ्य का संकल्प, बीमारियों से छुटकारा, मानव इतिहास का सबसे पुराना संकल्प है। सबसे प्राचीन रचनाओं में जहाँ अन्य जीवन-पक्षों का ज़िक्र है, वहीं स्वास्थ्य के प्रति सरोकार भी उभरता हुआ पहलू है। दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं, जैसे— भारत, चीन, रोम, यूनान आदि में स्वास्थ्य से सम्बन्धित रचनाएं तथा ग्रंथ मौजूद हैं और साथ ही प्रत्येक सभ्याचार के पास अपने ही घरेलू नुस्ख़े व टोटके हैं, जो कि अपने दमखम के कारण हज़ारों वर्ष से प्रचलित हैं और अपनाए जा रहे हैं।

प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि वह स्वस्थ रहे, उसे कभी किसी तरह की बीमारी परेशान न करे। हमारे सभ्याचार में एक बात आम कही जाती है कि भगवान करे, किसी भी व्यक्ति को जीवन में डॉक्टर और वकील की जरूरत न पड़े। ये दोनों ही

**९७, गुरु नानक एवेन्यू, मजीठा रोड, श्री अमृतसर-१४३००१, फोन : ९८१५८-०८५०६*

ज़िंदगी को पटड़ी से उतार देते हैं। आज के संदर्भ में यह तथ्य-भरपूर सच्चाई है कि लोगों को अपना स्वास्थ्य बनाए रखने या बीमारी के इलाज के समय अपने घर के बर्तन तक बेचने पड़ जाते हैं।

पहले यह जानना चाहिए कि स्वास्थ्य बिगड़ता कब और कैसे है ? चाहे कि शुरू से ही इसके अन्दाजे (अनुमान तथा अवसर) चर्चा में रहे होंगे और कुछ परिणाम सही भी सामने आए होंगे, लेकिन अब वैज्ञानिक समझ के साथ स्वास्थ्य व बीमारी के रहस्य स्पष्ट हुए हैं।

जिस प्रकार हमारे शरीर में अनेक प्रणालियां और अंग हैं, जैसे— दिल, फेफड़े, जिगर, गुरदे, पेट आदि जो अलग-अलग कार्य करते हैं, उसी प्रकार हमारे शरीर में एक सुरक्षा-प्रणाली है, जो कि हमारे शरीर को बीमार होने से रोकती है। यह किसी भी बीमारी के हमले के दौरान, बाहर से आए जीवाणुयों, विषाणुयों और घातक रासायनिक कणों के साथ मुकाबला करती है तथा व्यक्ति को जल्दी बीमार नहीं होने देती। इसके अंतर्गत समझ सकते हैं कि बीमारी की हालत तब बनी है, जब किसी की सुरक्षा-प्रणाली कमज़ोर हो जाती है और यह प्रणाली बाहरी हमलों का मुकाबला नहीं कर पाती।

अब इस पृष्टभूमि के मद्देनज़र समझना हो तो यह कह सकते हैं कि स्वस्थ रहने के लिए असली मूल नुक्ता एक ही है कि शरीर की सुरक्षा-प्रणाली को मज़बूत बना कर रखा जाये। इसके लिए वे सभी यत्न करने चाहिए, जिनसे यह प्रणाली ख़ुद तंदरुस्त व बलवान रहे और शरीर को बीमारियों से दूर रखे।

इस संदर्भ में ही सुरक्षा-प्रणाली के विशेषज्ञों और अन्वेषियों ने दर्शाया है कि शरीर की इस प्रणाली को स्वस्थ बनाए रखने के लिए मुख्य ज़रूरत है— संतुलित ख़ुराक की, (जिसमें आवश्यक तत्व सही मात्रा और अनुपात में हों और वे आयु व कर्मानुसार ही इस्तेमाल किए जाएँ, न कि स्वाद-स्वाद में ज़रूरत से अधिक। इसके साथ दूसरी अहम ज़रूरत है— शरीर को हरकत में रखना अर्थात् श्रम करना। इसी प्रकार शरीर के आवश्यक अन्य तत्व— हवा और पानी का प्रदूषण-रहित होना अत्यंत आवश्यक है। अगली ज़रूरत है— आपस में मिलजुल कर रहना, एक-दूसरे के काम आना, मन को शांत रखना आदि। ये सभी तत्व हमारी सुरक्षा-प्रणाली को मज़बूती प्रदान करते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी ने आज से पाँच सदी पूर्व मानव शरीर और मन की दुश्वारियों के लिए जिन पक्षों की पहचान की, वे आज हमारी वर्तमान समझ के बराबर ठहरते हैं, जैसे— विष खाना, ''पवणु गुरू पाणी पिता'' अहंकार को दीर्घ रोग कहना और इसी प्रकार बुरे का भी भला करने की महत्ता के बारे में प्रचार किया।

दुनिया के लगभग विगत सौ वर्ष के दौरान जहाँ मानव ने विकास के शिखर को छुआ है, वहीं मानव ने हथियारों के प्रयोग से धरती पर से हिरोशिमा-नागासाकी शहरों को भी दुनिया के नक्शे से मिटते हुए देखा है। अपने ही देश में भोपाल गैस दुर्घटना के दौरान ज़हरीली गैस के

कारण दो हज़ार लोग एक दम मौत के आगोश में चले गए और तकरीबन दो हज़ार लोग, उस गैस के प्रभाव में संकटमयी ज़िंदगी व्यतीत करते रहे। ऐसी घटनाओं के बाद विश्व-शान्ति या लोगों की स्वस्थ ज़िंदगी की बातें प्रत्येक ने की और इस दिशा में सोचते हुए यू. एन. ओ., यूनीसेफ और विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसी संस्थाएं अस्तित्व में आईं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने १९४८ ई. में स्वास्थ्य की परिभाषा में बताया कि मात्र बीमारियों का न होना ही तंदरुस्ती नहीं, बल्कि इसका अर्थ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक तौर पर पूरी तरह से स्वस्थ होना है।

यदि इन तीनों प्रकार के प्रसार की बात करें तो शारीरिक स्वास्थ्य के लिए स्पष्ट रूप से ख़ुराक, प्रदूषण रहित हवा-पानी की ज़रूरत, श्रम करना अर्थात् शरीर को हरकत में रखना प्रमुख हैं। चाहे कि भूखा और कर्महीन व्यक्ति मानसिक तौर पर परेशान होते हैं, लेकिन मन के अन्य कई पहलू स्पष्ट रूप से तनाव एवं बेचैनी का सबब बनते हैं। इसी प्रकार यदि समाज में आपसी मेल-मिलाप का सुखदाई माहौल न हो तो व्यक्ति को परेशानी होती है, जो मन को अशांत करती है तथा शरीर को भी नुकसान पहुंचाती है।

जब हम आज के संदर्भ में स्वास्थ्य से सम्बन्धित पहलुओं पर नज़र डालते हैं तो पता चलता है कि हमारी ख़ुराक में कई तरह के विषाणु हैं, हवा और पानी प्रदूषित हैं, प्रतिद्वंद्विता और उपभोग सभ्याचार के इस काल में भागदौड़ है, जो कि इंसान को कहीं भी नहीं पहुँचा रही। आपसी रिश्ते भी अपना गरिमा खो चुके हैं।

श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में लगभग इन उपरोक्त वर्णित सभी पक्षों पर बात की है। वो चाहे ख़ुराक की बात है, चाहे हवा-पानी की या आपसी मेल-मिलाप की। कर्म की महत्ता के बारे में जो श्री गुरु नानक देव जी ने प्रचार किया वह शायद किसी अन्य धार्मिक अगुआ ने नहीं किया।

ख़ुराक का मानवीय ज़िंदगी के साथ चालक वाला रिश्ता है। हर कोई महसूस कर सकता है कि भूख के समय व्यक्ति निढाल महसूस करता है, जैसे श्वास रुक हो गए हों। ख़ुराक शरीर रूपी इंजन को ताकत देती है और चलाती है। शरीर विज्ञान के मुताबिक, ऊर्जा (शारीरिक ताकत) के अलावा, ख़ुराक का मुख्य काम सुरक्षा-प्रणाली की मज़बूती भी है। हम यह भी महसूस कर सकते हैं कि ख़ुराक के प्रयोग का, शरीर के साथ-साथ मन की संतुष्टि के साथ भी संबंध है। जब पेट भरा होता है तो उस समय मन कहीं और उड़ता है। भूखा पेट मनुष्य के लिए बेचैनी पैदा करता है। भूखा व्यक्ति खीझा हुआ और चिड़चिड़ा होता है।

इसी संदर्भ में ही ख़ुराक के लिए इस्तेमाल किए गए पदार्थों का अपना स्वभाव है, जो अपने रासायनिक तत्वों के कारण दिमाग़ तथा मन को प्रभावित करते हैं। भारतीय शास्त्रों के मुताबिक तीन प्रकार की ख़ुराक का ज़िक्र है— सात्विक, राजसिक और तामसिक। सात्विक ख़ुराक—

मुख्य तौर पर दूध और फ़लों को माना जाता है, मन को शांत रखती है। तामसिक ख़ुराक— भुंजे हुए, तले हुए, मसालेदार पदार्थों से तैयार होती है, मन को उत्तेजित करती है। श्री गुरु नानक देव जी ने भी इस बारे में फरमान किया है :

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥

(पन्ना १६)

इसी तरह का भाव यहां भी दर्शाया गया है :

बिखु खाणा बिखु बोलणा बिखु की कार कमाइ ॥

(पन्ना १३३१)

ख़ुराक की जो स्थिति वर्तमान समय में हमारे सामने है, उसमें स्वाद प्रधान है, न कि पौष्टिकता। स्वाद के चक्कर में आदमी ज़रूरत से ज्यादा ख़ुराक का प्रयोग कर जाता है और मोटापा सहज ही अपना रूप दिखाने लगता है। फिर कई तरह के रोग आ घेरते हैं। फरमान है:

अधिक सुआद रोग अधिकाई . . . ॥

(पन्ना १२५५)

मेडिकल विज्ञान इस बात की ताकीद करता है कि ज़रूरत पड़ने पर कुछ खाने से और अपने आवश्यक वजन से ५-१० प्रतिशत वज़न कम रखने से शुगर रोग और ब्लड प्रेशर की बीमारियों के हमले से बचाव हो सकता है। इसी का जिक्र गुरबाणी में हुआ है :

खंडित निद्रा अलप अहारं नानक ततु बीचारो ॥

(पन्ना ९३९)

इसी प्रकार वर्तमान समय में वातावरण की सुरक्षा दुनिया भर का ज्वलंत मसला है। पानी और हवा, जो कि पूरे जीव जगत के लिए जीवन-दाता हैं, अब कहर बनते जा रहे हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने पाँच सौ वर्ष पूर्व इन कुदरती सौगातों के महत्व को दर्शाते हुए फरमान किया है :

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥

(पन्ना ८)

पानी को विशेष तौर पर यह कह कर उभारा कि दुनिया के, इस जीव-जगत के अस्तित्व का यही आधार है :

पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥

(पन्ना ४७२)

आज पानी का प्रदूषण कितनी ही मौतों का कारण बन रहा है और पैदा हो रही पानी की कमी वर्तमान समय में मानव-अस्तित्व के लिए संकट की घंटी बजा रही है।

श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी शिक्षाओं में जहाँ कुरीतियों के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद की, ज्ञान के महत्व को उभारा, वहीं कर्म को भी बराबर की अहमियत देकर प्रचार किया। श्री गुरु नानक देव जी, उस समय की एकमात्र विलक्षण शख्सियत हैं, जिन्होंने कर्म की केवल बात ही नहीं की, बल्कि ख़ुद भी इस पर अमल किया, जबकि बहुसंख्यक धार्मिक अगुआ दुनिया को माया कह कर, इसे छोड़ कर पहाड़ों-जंगलों का रास्ता ही दिखाते रहे :

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥

(पन्ना ५२२)

वर्तमान समय में बीमारियों का एक अलग वर्ग सामने आ गया है, जिसे जीवन-शैली की

बीमारियों का नाम दिया गया है। इस वर्ग में दिल की बीमारियाँ, दिमाग़ी रोग, मोटापा, शुगर रोग, कैंसर, उदासी रोग आदि आते हैं। ये सभी रोग कहीं न कहीं मनुष्य द्वारा कर्म से दूरी बनाए रखने के कारण उत्पन्न रोग हैं। आज हम महसूस कर रहे हैं कि 'जिंम कल्चर' को एक नये उपभोग के साथ जोड़ कर, एक अलग धंधा बना दिया है।

खाली मन, शैतान का घर है और साथ ही बेचैनी का कारण भी। आजकल इसे किसी कर्म में लगाने की बजाय नशों का सहारा लिया जा रहा है। वर्तमान प्रतिद्वंद्विता के युग में एक दूसरे को पीछे धकेल कर आगे बढ़ने की इच्छा और फिर अपनी नाजायज व गलत ढंग से की गई प्राप्तियों का हश्र, आत्माभिमान में नहीं, बल्कि घमंडबाजी में होता है, जिसे मनोविज्ञान की भाषा में 'हउमै' (अहंकार) कहा जाता है। इसे श्री गुरु नानक देव जी ने एक रोग कहा है। फरमान है :

हउमै दीरघ रोगु है . . . ॥ (पन्ना ४६६)

इसी संदर्भ में प्रतिद्वंद्विता में एक-दूसरे से आगे निकलने की दुर्भावना, क्रोध को भी जन्म देती है। आवश्यकता से अधिक और गलत ढंग से कमाया हुआ पैसा जहाँ नशे की तरफ धकेलता है, वहीं काम-भावना को भी उत्तेजित करता है। इन दोनों पक्षों को भी गुरबाणी ने रोग का दर्जा दिया है :

कामु क्रोधु काइआ कउ गालै ॥ (पन्ना ९३२)

विश्व स्वास्थ्य संगठन की तरफ से गिनाए गए स्वास्थ्य के तीन प्रसारों में से एक प्रसार 'सामाजिक स्वास्थ्य' है। इसका अर्थ है कि हमारे समाज में, आपस में एक-दूसरे के साथ किस प्रकार के रिश्ते हैं ? क्या हम निज तक ही सीमित हैं या समाज के प्रति भी अपना कोई फ़र्ज़ समझते हैं ? यह अब स्पष्ट रूप से देखने में आ रहा है कि विकास मात्र भौतिक सुविधायों के साथ नहीं जुड़ा हुआ। ज़िंदगी में ख़ुशी और संतुष्टि का एक पैमाना एक-दूसरे की मदद करता है। गुरबाणी के शब्द हैं :

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥

(पन्ना १३८१)

इस प्रकार हम मानव स्वास्थ्य को दरपेश खतरों और पैदा हो रही स्वास्थ्य समस्याओं के मद्देनज़र, श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दिखाए गए मार्ग, उनके द्वारा सुझाए गए नुक्तों को जीवन-जाच बना कर स्वस्थ समाज की सृजना करने की तरफ बढ़ सकते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि ये सभी नुक्ते चाहे ख़ुराक की किस्म, मात्रा या दोनों के साथ जुड़े हों, चाहे कर्म करने की बात हो और चाहे हवा-पानी के प्रदूषित होने की, सभी वैज्ञानिक तौर पर मानव स्वास्थ्य के साथ जोड़ कर जीवन में अपनाने के लिए विचारे और प्रसारित किए जा रहे हैं। मानसिक समस्याओं के पक्ष से भी अहंकार आज सबसे तीव्र रूप से शरीर, मन और मानसिक रिश्तों को कमजोर कर रहा है, जिस कारण यह सदी, मानसिक रोगों की सदी के तौर पर उभर कर सामने आ रही है।

प्रेम के पुंज : श्री गुरु नानक देव जी

*-बीबी संदीप कौर**

श्री गुरु नानक देव जी सिक्ख धर्म के संस्थापक, सूर्य रूप, जगत-गुरु और अज्ञानता के अंधकार का विनाश करने वाले महान सतिगुरु हैं, जिन्होंने लोक-कल्याण के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। गुरु साहिब की बाणी उस समय की रम्ज और हालात को बयान करती है। गुरु साहिब ने आम लोगों के दिल तक पहुंचने और उन्हें सही मार्ग दिखाने के लिए उन्हीं लोगों की भाषा का प्रयोग किया। गुरु साहिब को पंजाबी, हिंदी, फारसी, अरबी, संस्कृत आदि भाषाओं का भरपूर ज्ञान था, जो कि उनकी बाणी में साफ झलकता है।

श्री गुरु नानक साहिब ने किसी भी धर्म का विरोध नहीं किया। उन्होंने निर्गुण प्रभु की उपासना की और लोगों को सच्चे पिता वाहिगुरु पर विश्वास करने एवं उसके हुक्म पर चलने का संदेश दिया। आप जी ने मूल-मंत्र के माध्यम से वाहिगुरु की उपमा की :

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि॥

(पन्ना १)

श्री गुरु नानक साहिब ने सब धर्मों को एक समान समझते हुए उपदेश दिये। उन्होंने झूठ, पाखंड और भ्रष्टाचार का विरोध किया। जो कर्मकांड और नियम समाज के उत्थान के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं, जो सामाजिक शक्तियां लोगों को नीच कहकर उन्हें दबाने का कार्य करती हैं, उनका कठोर शब्दों में विरोध करते हुए गुरु साहिब फरमान करते हैं :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु॥
नानकु तिन कै संगि साथि
वडिआ सिउ किआ रीस॥ *(पन्ना १५)*

''जो (तथाकथित) तुच्छ से तुच्छ जाति के लोग हैं और जो उनसे भी तुच्छ कहे जाते हैं, (हे प्रभु!) मैं उनके साथ हूं। मायाधारियों (धनवान लोगों) के मार्ग पर चलने की मेरी कोई इच्छा नहीं।''

श्री गुरु नानक साहिब की बाणी समुद्र में पड़े उस मोती के समान है जो गहराई में रहकर भी अपनी चमक बिखेरता रहता है; उस अमृत से भरे घड़े के समान है, जो कभी खाली नहीं होता। श्री गुरु नानक देव जी मनुष्य को अपने मन की मैल दूर करने कि लिए कहते हैं न कि कपड़ों से दाग-धब्बे मिटाकर दिखावा करने को। मनुष्य को अकाल पुरख के नाम में रत् रहकर ही अपने बुरे कर्मों से छुटकारा

**२६-बी/१, कैनेडी एवेन्यू, एल्बर्ट रोड, श्री अमृतसर-१४३००१*

मिलता है :

मूत पलीती कपड़ु होइ ॥
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ *(पन्ना ४)*

श्री गुरु नानक देव जी ने मनुष्य को अच्छा कर्म करने का उपदेश देते हुए कहा कि हे मनुष्य! तू जैसे कर्म करेगा वैसे ही संस्कार अपने अंदर उत्पन्न करेगा। जैसा तू बोयेगा वैसा फल तुझे मिलेगा :

करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ *(पन्ना ४)*

गुरु जी की बाणी में मुहावरेदार पंजाबी शब्दावली का प्रयोग भी हुआ है। अरबी-फारसी के शब्द आवश्यकतानुसार प्रयोग हुए हैं, जो सार्थक एवं स्पष्ट हैं। आपकी बाणी सरल एवं स्पष्ट होने के कारण आसानी से बरज़बान हो जाती है :

— . . . मनि जीतै जगु जीतु ॥ *(पन्ना ६)*
— नानक दुखीआ सभु संसारु ॥ *(पन्ना ९५४)*
— मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥
(पन्ना ४७०)

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में परमात्मा के स्वरूप, हुक्म, सृष्टि-रचना, मनुष्य के भटकते मन, मानव-समस्याओं, माया, मोह, अहंकार, आत्मा का परमात्मा से मिलाप, संयोग-वियोग, मेल, आत्म-आनंद की प्राप्ति के साधन, मन पर काबू पाने की विधि, भक्ति-मार्ग, योग-मार्ग, ज्ञान-मार्ग आदि का बहुत ही सुंदर शब्दावली में उल्लेख किया गया है। गुरु साहिब ने अलंकारों, रसों के प्रयोग से शब्दावली को प्रभावशाली बनाया है। गुरु जी ने शांत रस, शृंगार रस, करुणा रस, वीर रस, रूद्र रस, भयानक रस, वीभत्स रस, अद्‌भुत रस, हास्य रस आदि का खूबसूरती से प्रयोग किया है, जिसकी कुछ उदाहरणें इस प्रकार हैं :

— सावणि सरस मना घण वरसहि रुति आए ॥
मै मनि तनि सहु भावै पिर परदेसि सिधाए ॥
पिरु घरि नही आवै मरीऐ
हावै दामनि चमकि डराए ॥
सेज इकेली खरी दुहेली
मरणु भइआ दुखु माए ॥
हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी
कापड़ु तनि न सुखावए ॥
नानक सा सोहागणि
कंती पिर कै अंकि समावए ॥ *(पन्ना ११०८)*
— बाबीहा प्रिउ बोले कोकिल बाणीआ ॥
सा धन सभि रस चोलै अंकि समाणीआ ॥
हरि अंकि समाणी जा प्रभ
भाणी सा सोहागणि नारे ॥
नव घर थापि महल घरु ऊचउ
निज घरि वासु मुरारे ॥ *(पन्ना ११०७)*
— तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥
जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥१ ॥
डरीऐ जे डरु होवै होरु ॥
डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥ *(पन्ना १५१)*

— तूं सुणि हरणा कालिआ
की वाड़ीऐ राता राम ॥
बिखु फलु मीठा चारि दिन
फिरि होवै ताता राम ॥
फिरि होइ ताता खरा माता
नाम बिनु परतापए ॥
ओहु जेव साइर देइ
लहरी बिजुल जिवै चमकए ॥ (पन्ना ४३८)
— बिनु नाम हरि के भरमि भूले
पचहि मुगध अचेतिआ ॥
हरि नामु भगति न रिदै साचा
से अंति धाही रुंनिआ ॥
सचु कहै नानकु सबदि
साचै मेलि चिरी विछुंनिआ ॥ (पन्ना ४३९)

कवि-हृदय आम मनुष्य के हृदय से भिन्न होता है। वह अपने आस-पास के वातावरण से प्रेरणा लेकर मन के भावों को कागज पर लिखता है। श्री गुरु नानक देव जी ने सृष्टि और प्रकृति-प्रेम को बहुत ही मार्मिक ढंग से उल्लेखित किया है। उनका प्रेम आध्यात्मिक सच्चाइयों पर आधारित है। उन्हें सारा ब्रह्मांड थाल के समान प्रतीत होता है, जिसमें चांद, तारे, सूरज दीपक के समान जल रहे हैं। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मानों परमात्मा की आरती कर रहा है, फूल बरसा रहा है :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने
तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे
सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१ ॥
कैसी आरती होइ ॥
भव खंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ (पन्ना १३)

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी पढ़ने से पता चलता है कि श्री गुरु नानक साहिब का प्रकृति (कुदरत) के साथ बहुत प्रेम था। उन्होंने प्रकृति की महिमा और शक्ति का जो वर्णन किया है, वह संसार को निहाल कर देता है :

कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ
कुदरति भउ सुख सारु ॥
कुदरति पाताली आकासी
कुदरति सरब आकारु ॥
कुदरति वेद पुराण कतेबा
कुदरति सरब वीचारु ॥
कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु
कुदरति सरब पिआरु ॥
कुदरति जाती जिनसी रंगी
कुदरति जीअ जहान ॥
कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ
कुदरति मानु अभिमानु ॥
कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु
कुदरति धरती खाकु ॥
सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु
करता पाकी नाई पाकु ॥
नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥
(पन्ना ४६४)

गुरु साहिब फरमान करते हैं कि जो कुछ

दिख रहा है वो सब (हे प्रभु!) तेरी ही लीला है। पाताल और आकाश में तेरी ही कुदरत है। वेद, पुराण और कतेब सारी तेरी ही कला है। खाना-पीना, पहनना सब तेरी ही करामात है। जाति, रंग, जगत में तेरी ही कुदरत का वास है। सब तेरी ही कला है। तू ही कुदरत का मालिक है। तू ही इस खेल का रचनहार है। तेरी स्तुति सच्ची है। तू खुद पवित्र है।

श्री गुरु नानक देव जी ने परमात्मा की सृजना की प्रशंसा की है। परमात्मा ने जो भी सृजना की है वह सच्ची और स्वच्छ है। गुरु साहिब मानते हैं कि जो सच्चे पिता वाहिगुरु ने निर्मित किया है वह ब्रह्मांड में शोभनीय है, सत्य है। सच्चे पिता का दरबार अटल है। जो भी जीव वाहिगुरु का सिमरन कर रहा है वो सच्चा है, वो परमात्मा का रूप है। जो जन्म-मरण के भवसागर में पड़ा है वह सच्चे पिता परमात्मा की सार नहीं जान सकता :

सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥
सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥
सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥
सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥
सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥
सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥
सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥
सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥
सची तेरी सिफति सची सालाह ॥
सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥
नानक सचु धिआइनि सचु ॥
जो मरि जंमे सु कचु निकचु ॥ (पन्ना ४६३)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि गुरु जी की बाणी के अनुसार सच्चा पातशाह एक है। उसकी रचित सम्पूर्ण सृष्टि है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश सब परमात्मा की रचना हैं। उसे सृष्टि के निर्माण एवं विनाश के लिए किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं। जो भी मानव दयालु और कृपालु पातशाह के चरणों के साथ जुड़ जाता है वह आवागमन के चक्कर से मुक्ति पा लेता है। जात-पांत, छुआ-छूत सब मानव-मन की उपज हैं। वाहिगुरु ने सबको एक समान बना कर धरती पर भेजा है। परमात्मा के हुक्म में ही सब चल रहा है। उसके हुक्म के बाहर कुछ नहीं। कृपायुक्त वाहिगुरु की कृपा सब पर बनी रहती है :

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥
हुकमी उतमु नीचु
हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥
इकना हुकमी बखसीस
इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

धरम हेत साका जिनि कीआ

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

गुरु साहिबान का संसार-आगमन धर्म व धर्मानुयाइयों के हित संरक्षित करने के एकमात्र उद्देश्य से हुआ था। सन् १४६९ से सन् १७०८ के मध्य का काल मानव सभ्यता के इतिहास का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है, जब परमात्मा का सच्चा स्वरूप प्रकट हुआ और सामान्य जन धर्म के निकट आया। यह ऐसा काल था जब धर्म व मानवीय मूल्यों पर सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण संकट आसन्न थे। भक्ति-काल के अनेक संत, महात्मा अपने स्तर पर समाज को श्रेष्ठ बनाने हेतु क्रियाशील थे। श्री गुरु नानक साहिब ने अपने मिशन को विश्वव्यापी आधार प्रदान किया और मानव जीवन से जुड़े प्रत्येक पक्ष को अपने सरोकारों में शामिल किया, ताकि समाज को सम्पूर्ण निदान प्राप्त हो सके। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का गुरु-काल भी उसी प्रयास की पुष्टि करता है। उनके उपकार भी सर्वपक्षीय थे। तत्कालीन परिस्थितियों का कोई भी ऐसा प्रश्न नहीं था जिसे श्री गुरु तेग बहादर जी ने अछूता छोड़ दिया हो। अपनी बाणी, अपनी धर्म प्रचार-यात्राओं, अपने उपकारों व त्याग से उन्होंने एक ऐसे समाज का मार्ग प्रशस्त किया जहां परमात्मा की प्रतिष्ठा हो और बिना भेदभाव सभी का सम्मान सुनिश्चित किया जा सके। इसके लिये जब अपरिहार्य हो गया तो गुरु साहिब ने स्वयं आगे आकर अपना बलिदान भी दिया। यह धर्म का आधार दृढ़ किये बिना संभव नहीं था।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी के दिल्ली में ज्योति-जोत समाने के बाद अगले गुरु के बारे में स्पष्टता न होने के कारण सिक्खों में बड़े भ्रम का वातावरण बन गया था। यह एक वर्ष से अधिक समय तक बना रहा। गुरुआई के अनेक दावेदार सामने आ गये थे। ऐसी स्थिति पूर्व में कभी उत्पन्न नहीं हुई थी। सिक्ख भटक रहे थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब यह भली-भांति जानते थे कि अब उन्हें सिक्ख पंथ को नेतृत्व देना है, किन्तु उन्होंने बड़े संयम व विवेक से काम लिया। गुरु साहिब ने अपनी दावेदारी कभी भी पेश नहीं की। यह कार्य उन्होंने सिक्खों की अंतर चेतना पर छोड़ दिया कि अपने गुरु का मार्ग वे स्वयं खोजें। यह सिक्खों की अति कठिन परीक्षा थी, जिसमें वे सफल रहे और श्री गुरु तेग बहादर साहिब गुरुआई पर आसीन हुए। उन्होंने सिक्खों के मध्य एक सामान्य सिक्ख की तरह आचरण करते हुए एक मूल्यवान सीख दी कि यदि मनुष्य धैर्य व विश्वास रखे तो सत्य प्रकट होने में कोई बाधा नहीं आती। समस्त दावेदार स्वयं ही थक-हार कर परिदृश्य-से गुम हो गये और एक प्रतिद्वंद्विता रखने वाले को श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने स्वयं क्षमा कर दिया। गुरु वह है जो स्वयं से नहीं सच

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

से जोड़ता है :

पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥
सचै सबदि सचि समाइ ॥ (पन्ना ५६०)

सच्चा गुरु वह है जो परमात्मा की भक्ति व उससे संगम का मार्ग बताये। सच्चे गुरु से ऐसा ज्ञान प्राप्त होता है जिससे विकारों, माया के जाल से मुक्ति प्राप्त हो जाती है और जीवन के वास्तविक उद्देश्य की पहचान हो जाती है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने गुरुआई को लेकर व्याप्त भ्रम के दौर में अपने आचरण से सिक्खों को समझाया कि व्यर्थ के विवाद से बचना चाहिये और संयम व धैर्य रखना चाहिये, क्योंकि सत्य को कभी पराजित नहीं किया जा सकता। गुरुआई पर आसीन होने के बाद विलंब किये बिना श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने धर्म-प्रचार का कार्य आरंभ कर दिया। 'चक्क नानकी' नगर, जिसे बाद में 'श्री अनंदपुर साहिब' नाम से जाना गया, बसाने के कुछ माह के भीतर ही श्री गुरु तेग बहादर साहिब धर्म-प्रचार-यात्रा पर निकल पड़े। गुरु साहिब अन्तर्यामी व भविष्यदृष्टा थे। वे जानते थे कि देश-काल की परिस्थितियां बद से बदतर होने वाली हैं और उनके पास अधिक समय नहीं है। श्री गुरु नानक साहिब के बाद अन्य गुरु साहिबान ने लंबी प्रचार-यात्रायें नहीं की थीं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब अपने पूरे परिवार व प्रमुख सिक्खों के साथ निकले थे। संसार में गतिमान लोगों की संख्या कम नहीं थी। लोग स्थान-स्थान पर भटक रहे थे। कभी कहीं, कभी कहीं माया हेतु अपने हाथ पसार रहे थे।

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥
लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत
आसा लागिओ धन की ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत
सेव करत जन जन की ॥
दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत
नह सुध राम भजन की ॥ (पन्ना ४११)

उपरोक्त वचन श्री गुरु तेग बहादर साहिब का ही है। इसकी प्रथम पंक्ति पढ़ने से ही बोध हो जाता है कि गुरु साहिब के मन में माया व विकारों के चक्रव्यूह में फंसे संसार की दुर्दशा देख कर कितनी गहन व्यथा व पीड़ा थी। अपनी व्यथा वे परमात्मा के अतिरिक्त और किससे कह सकते थे! उन्होंने कहा कि लोभ के पाश में बुरी तरह से जकड़े हुए लोग दसों दिशाओं में भटक रहे हैं। ऐसे लोगों का एक ही लक्ष्य है— धन व सुख-सुविधा के सांसारिक संसाधन अधिकाधिक मात्रा में एकत्र करना। इसके लिये वे भारी दुख भी सहते हैं, किन्तु अपने लोभ की पूर्ति में लगे रहते हैं। सांसारिक सुखों हेतु लोभी लोग किसी के भी आगे शीश झुकाने को तैयार रहते हैं और कुत्ते की तरह दर-दर भटकते रहते हैं। लोभ के गहरे प्रभाव में वे लोग परमात्मा को भी विस्मृत कर देते हैं। गुरु साहिब ने जहां माया में रमे हुए लोगों की दुर्दशा का वर्णन किया वहीं उनके उद्धार की चिंता भी की।

मानस जनम अकारथ खोवत
लाज न लोक हसन की ॥
नानक हरि जसु किउ नही गावत
कुमति बिनासै तन की ॥ (पन्ना ४११)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कहा कि माया और विकारों में भटके हुए लोग अपना जीवन व्यर्थ गंवा रहे हैं। लोग उनकी इस मूर्खता को देख

उपहास भी कर रहे हैं, किन्तु उन्हें इसकी परवाह नहीं है। इस तरह जीवन निरर्थक व्यतीत कर देने के स्थान पर उन्हें परमात्मा का नाम जपना चाहिये, ताकि वे भ्रम व दुर्बुद्धि से उबर सकें। गुरु साहिब का मिशन लोगों को परमात्मा के साथ जोड़ना था, ताकि वे सुबुद्धि धारण कर जीवन सार्थक कर सकें। कहते हैं कि जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब का संसार-आगमन हुआ था उसी समय पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने वचन किया था कि यह शिशु आगे चल कर धर्म का महान रक्षक बनेगा। भाई दित्त सिंघ ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की जीवन-कथा में लिखा है कि जब गुरु जी पांच वर्ष के हो गये, वे आत्मलीनता की अवस्था में रहते थे और बातचीत कम ही किया करते थे। यह देख कर एक बार माता नानकी जी ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से चिंता व्यक्त की कि आपने तो कहा था कि यह बालक धर्म-रक्षक बनेगा, किन्तु इसे तो अपनी ही सुध नहीं रहती, लोगों को क्या उपदेश देगा! श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने उत्तर दिया था कि उचित समय आने पर ही फल लगते हैं। यह भी समय आने पर धर्म-ध्वज बनेगा। उनका यह वचन सत्य सिद्ध हुआ था।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के अंदर का वैराग्य अकारण नहीं था। धर्म-अध्यात्म की शिक्षा ने उन्हें संसार के सत्य से भली प्रकार अवगत करा दिया था। इसके अतिरिक्त बाल्यावस्था में ही उन्हें अपने बड़े भ्राता बाबा अटल राय जी, जिनसे वे गहरा प्रेम करते थे व उनके साथ खेलते थे, के शरीरांत का विछोह सहना पड़ा था। इसके बाद बाबा गुरदित्ता जी का साथ छूट गया था। बाबा बुड्ढा जी व भाई गुरदास जी, जिनसे उन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी, भी संसार से विदा हो गये। ये सारी घटनायें उनकी मात्र दस वर्ष की अवस्था के अंदर ही एक के बाद एक घटित हुई थीं। धर्म-दर्शन को यथार्थ के धरातल पर देखना श्री गुरु तेग बहादर साहिब के अंदर धर्म का दृढ़ संकल्प विकसित करने वाला था। उनकी वृत्ति में विशेष गंभीरता व उच्चता प्रकट होने लगी थी। इससे सिक्ख संगत में उनके लिये आदर-भाव उत्पन्न हो गया था। जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के दर्शन न उपलब्ध हो पाते, संगत श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास आ जाया करती थी।

धर्म-रक्षा हेतु आध्यात्मिक बल ही पर्याप्त नहीं होता। कलियुग में अधर्म की शक्ति बढ़ गई थी। इससे निपटने हेतु शस्त्र बल की प्रवीणता भी आवश्यक हो गई थी, ताकि समय व परिस्थितियों के अनुसार उसका भी उपयोग किया जा सके। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने चौदह वर्ष की आयु में करतारपुर के युद्ध में अपार पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए मुगल सेना को पराजित करने में प्रमुख भूमिका निभाई थी। बाद में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के ज्योति-जोत समाने व श्री गुरु हरिराय साहिब के गुरुआई पर आसीन होने के पश्चात श्री गुरु तेग बहादर साहिब अपनी माँ माता नानकी जी व सुपत्नी माता गुजरी जी के साथ बकाला चले आये थे और यहां दो दशक से अधिक समय भक्ति, परोपकार के कार्यों में व्यतीत किया था। बकाला रहते हुए आपने धर्म-प्रचार- यात्रायें भी कीं और पटना साहिब तक गये थे। जब उन्हें श्री गुरु हरिराय साहिब के

ज्योति-जोत समाने का समाचार मिला तो पटना साहिब में यात्रा रोक कर वापिस आ गये थे। यह उनकी धर्म-प्रचार-यात्रा का दूसरा चरण था जो गुरुआई पर विराजमान होने के पश्चात 'चक्क नानकी' से आरंभ की थी। श्री गुरु नानक साहिब के पदचिन्हों पर चलते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने जहां समय का सदुपयोग कर लोगों को माया, विकारों के जाल से उबार कर परमात्मा की भक्ति के लिये प्रेरित किया, वहीं स्थान-स्थान पर लोगों की अन्य समस्याओं का भी निराकरण किया, जो सामान्य जनजीवन को प्रभावित कर रही थीं। इस यात्रा के आरंभ से पूर्व नया नगर बसाने का निर्णय अत्यंत दूरदर्शितापूर्ण व सामयिक था। यहां बसने के लिये लोग आने लगे थे। जिनके पास धन था, उन्होंने स्वयं घर बना लिये थे। निर्धन लोगों की गुरु साहिब ने आर्थिक सहायता की। बाजार भी बन गये। यात्रियों के लिये धर्मशाला भी बनाई गई। इससे श्री गुरु तेग बहादर साहिब की मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता व प्रतिबद्धता का सहज ही ज्ञान होता है। नगर के निर्माण-कार्य, जो अभी चल ही रहे थे, श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपने विश्वासपात्र सिक्खों पर छोड़ कर अगस्त, सन् १६६५ में अपनी यात्रा आरंभ की थी। श्री गुरु नानक साहिब ने जब मानवता के कल्याण का मिशन आरंभ किया था तो सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियां अत्यधिक विषम थीं। उनसे अपनी आध्यात्मिक शक्ति प्रदर्शित करने के लिये चमत्कार दिखाने को कहा जाता। उन दिनों धर्म-जगत में चमत्कारों का प्रदर्शन आम था। इसी से धर्म-जगत में किसी की प्रतिष्ठा स्थापित होती थी। श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि उनके पास कोई चमत्कार नहीं, बस, परमात्मा का नाम है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास भी केवल नाम था। यात्रा के दौरान मूलोवाल गांव में कुएं के खारे पानी को मीठा करने, हडिआले में रोगी गांववासियों का रोग दूर करने के लिये 'सतिनाम' ही कौतुक बना था :

हरि को नामु सदा सुखदाई ॥ (पन्ना १००८)

परमात्मा का नाम सभी दुख हर लेने वाला व सदैव सुख देने वाला है। नाम जपने से सारे कार्य सिद्ध होते हैं। नाम पूर्ण बल देने वाला, संकटों से उबरने की सामर्थ्य देने वाला है। गुरु साहिबान ने सदैव नाम का बल ही प्रकट किया और यही बल लोगों को प्रदान किया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब नाम की महिमा से जन-जन को अवगत कराते। कहीं, सरोवर, कहीं धर्मशाला, कहीं कुएं खुदवाने के परोपकार करते हुए कुरुक्षेत्र से होते हुए उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर गये। विभिन्न नगरों में रुकते हुए, लोगों का उद्धार करते हुए गुरु साहिब प्रयाग पहुंचे और यहां लंबा समय रहे। इसका उल्लेख श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी 'बचित्र नाटक' में भी मिलता है। काशी होते हुए गुरु साहिब परिवार व सिक्खों के दल सहित पटना साहिब पहुंचे तो वहां परिवार के ठहरने का प्रबंध किया, क्योंकि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का संसार-आगमन होने वाला था। आगे की यात्रा आरंभ करते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब ढाका होते हुए आसाम तक गये। जब वे ढाका में थे उस समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पटना साहिब में आगमन हुआ था। गुरु साहिब जहां-जहां भी गये, स्थानीय लोग उनसे

प्रभावित होकर सिक्ख बने और पुरातन सिक्ख संगत में नये उत्साह का संचार भी हुआ। धुबरी नामक स्थान पर अपने तन्त्र-मन्त्र से प्रभाव स्थापित कर चुके लोगों ने अपनी पोल खुलने के भय से गुरु साहिब को भयभीत करने का प्रयास किया और क्षति पहुंचाने के उद्देश्य से एक २६ फुट लंबा पत्थर भी फेंका। यह पत्थर श्री गुरु तेग बहादर साहिब के निकट आ जमीन में ऊर्ध्वाकार धंस गया। एक जादूगरनी ने एक वृक्ष उखाड़ कर गुरु साहिब पर फेंका तो गुरु साहिब ने फुर्ती से अपने तरकश से तीर निकाल कर उसे हवा में ही नष्ट कर दिया। अभिप्राय यह कि अधर्म से कैसे लड़ना है और कैसे उसे परास्त करना है, यह शिक्षा श्री गुरु तेग बहादर साहिब संसार को प्रत्यक्ष प्रमाणों से दे रहे थे। उन्होंने सिखाया कि धर्म के मार्ग पर चलना है तो परमात्मा पर अटल विश्वास व सर्वकल्याण की भावना आवश्यक है। परिस्थिति कोई भी हो, धैर्य, संयम व विवेक सदैव जाग्रत रहना चाहिये। धर्म की रक्षा के लिये संपूर्ण बल चाहिये। आवश्यकता पड़ने पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने शस्त्र भी उठाये, किन्तु संयमित व सीमित उद्देश्य के लिये। गुरु साहिब का तीर फेंके गये वृक्ष पर तो चला, किन्तु वृक्ष फेंकने वाली जादूगरनी पर नहीं, क्योंकि गुरु साहिब के अंतर में सहज व शांति थी। प्रतिशोध, क्रोध का कोई स्थान नहीं था। यह सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक अवस्था का लक्षण होता है। गुरु साहिब का अगला तीर उस जादूगरनी का खातिमा कर सकता था, किन्तु यह गुरु साहिब की ईश्वरीय दृष्टि में अनावश्यक था। जादूगरनी को अपनी भूल का एहसास हुआ और वह गुरु साहिब की शरण में आ गई। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का संकल्प भटके हुए लोगों को अधर्म व अज्ञानता की नींद से जगाना था, उन्हें उद्धार का अवसर देना था ।

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥
(पन्ना ७२६)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब वीर योद्धा भी थे और युद्ध-कला में प्रवीण भी। इसके बाद भी उनके अंदर संयम, सहज व क्षमाशीलता का अपार सागर लहरा रहा था। यह बहुत-से लोगों को आश्चर्य में डाल देता है। उनके प्रश्नों का उत्तर श्री गुरु तेग बहादर साहिब के उपरोक्त वचन में मिल जायेगा। गुरु साहिब ने अधर्मी, अन्यायी लोगों को दया योग्य माना, जिन्हें यह भी ज्ञान नहीं कि जिस पर वे अपना स्वामित्व मान रहे हैं वह कुछ भी उनका नहीं है। यहां तक कि वह तन भी, जो जन्म से ही उनके साथ है।

पंजाब के बिगड़ते हालात की सूचनायें आ रही थीं। इस कारण अपनी आगे की यात्रायें निरस्त कर श्री गुरु तेग बहादर श्री अनंदपुर साहिब वापिस आ गये। बाद में उनका परिवार भी पटना साहिब से पहुंच गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पांच वर्ष के हो चुके थे। समय पंख लगा कर उड़ रहा था और उससे भी अधिक तीव्रता से औरंगजेब के जुल्म गैर-मुस्लिमों पर बढ़ते जा रहे थे। औरंगजेब किसी भी प्रकार गैर-मुस्लिमों का धर्म बदल कर उन्हें इसलाम धर्म में ले आना चाहता था। सन् १६७१ में जब कश्मीर का सूबेदार इफ्तिखार खान बना तो उसने धर्मान्धता में डूब कर दमन का चक्र भयावह ढंग से चलाना

आरंभ कर दिया। हिन्दुओं को प्रताड़ित व अपमानित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही थी। जब यह दमन-चक्र तेज होता गया तो हिंदू समाज त्राहि-त्राहि कर उठा। उनका धर्म घोर संकट में था। उस समय कश्मीर के ब्राह्मणों को आशा की एकमात्र किरण श्री गुरु तेग बहादर साहिब में नज़र आई। २५ मई, सन् १६७५ को सोलह ब्राह्मणों का एक दल पंडित कृपा राम के नेतृत्व में श्री अनंदपुर साहिब आया और श्री गुरु तेग बहादर साहिब से अपनी व्यथा बताते हुए रक्षा की याचना की। कश्मीर में धर्म के अधिकार पर आक्रमण हो रहा था। निर्बलों की आवाज को दबाया जा रहा था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने उनकी पीड़ा को अपनी पीड़ा बना लिया। जो परम पुरुष परमात्मा में रमा हो उसके लिये परमात्मा की रची सम्पूर्ण सृष्टि के लिये भावना होती है।

मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥
कउणु जाणै पीर पराई ॥
हम नाही चिंत पराई ॥ *(पन्ना ७९५)*

जिसका मन दयालु, कृपालु परमात्मा में अभेद हो गया है वह भी परमात्मा के समान ही दया व कृपा का गुण ग्रहण कर लेता है। वह किसी अन्य मार्ग पर नहीं चलता। उसका एक ही मार्ग है— परमात्मा का। यदि परमात्मा सभी जीवों पर कृपा कर रहा है तो परमात्मा में अभेद परम पुरुष भी ऐसा करने से पीछे नहीं हटता। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने सम्पूर्ण मानवता की पीड़ा को अपनी पीड़ा बनाया। किसी के पानी का संकट दूर किया, किसी के रोग का निवारण किया, किसी के रहने का प्रबंध किया, किसी के जीविकोपार्जन की व्यवस्था की और किसी के अहंकार का निवारण कर उसका उद्धार किया। कश्मीर के निराश-हताश ब्राह्मणों की रक्षा के लिये आगे आना इसी भावना का उत्कर्ष था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की दिल्ली के चांदनी चौक में एक महान घटना के साथ ही एक महान शिक्षा थी— धर्म के लिये प्रतिबद्धता के पोषण की। धर्म की वास्तविक परीक्षा विकट परिस्थितियों में ही होती है। इससे पार पाने की शिक्षा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में भी मिलती है जो उनके बलिदान द्वारा व्यवहारिक रूप में प्रकट हुई।

धर्म-रक्षा हेतु गुरु साहिब की पहली शिक्षा थी— भय से मुक्त रहना।

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥
कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥
(पन्ना १४२६)

कैसी भी विषम परिस्थिति हो, मनुष्य के लिये भय का कोई कारण नहीं होता, क्योंकि जिस परमात्मा की मनुष्य ने शरण ली है वह सदैव उसके साथ सहायक बन कर रहता है और उसके सारे भय दूर कर उसकी मर्यादा बनाये रखता है। परमात्मा का भक्त न तो कभी असहाय होता है, न भयभीत। औरंगजेब के जुल्म से पूरा भारत त्रस्त व भयभीत था, किन्तु श्री गुरु तेग बहादर साहिब पर इसका कोई प्रभाव नहीं था :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
(पन्ना १४२७)

सदैव संयम में रहना चाहिये। अपनी शक्ति का न तो दुरुपयोग किया जाये, न किसी अन्य का अत्याचार सहन किया जाये। श्री गुरु तेग बहादर साहिब महान योद्धा भी थे और आत्मबल के पुंज

भी। फिर भी उन्होंने न तो औरंगजेब को भयभीत करने का कोई यत्न किया और न ही स्वयं उसका भय स्वीकार किया।

जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥
कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥

(पन्ना १४२७)

जब मनुष्य पूर्ण रूप से परमात्मा को समर्पित हो जाये उसे काल का भी भय नहीं रहता। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अत्यंत सहजता व स्वेच्छा से अपना शीश जल्लाद के आगे झुका कर यह सिद्ध किया।

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥

(पन्ना १४२९)

परमात्मा की कृपा अपार बल प्रदान करने वाली है। यह बल श्री गुरु तेग बहादर साहिब में प्रकट था तभी वे अपने प्रिय सिक्खों— भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी व भाई दिआला जी की निर्मम शहीदी अपनी आंखों के सामने देख कर भी सहज व शांत रहे। औरंगजेब की उनका मनोबल तोड़ने की चाल असफल हो गई।

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥

(पन्ना १४२९)

धर्म व सत्य के मार्ग पर चलने वाले को कभी कोई भ्रम, संशय व चिंता नहीं करनी चाहिये। जो परमात्मा चाहता है वही होता है और होकर रहता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जानते थे कि उनकी शहादत ही स्थिति का विकल्प है, इसलिये अपनी शहीदी को लेकर उनके मन में कोई दुविधा नहीं थी। इससे धर्म व धर्म के मार्ग पर चलने वालों की शोभा बनती है। उनकी शहादत धर्म-जगत के लिये एक सर्वकालिक आदर्श बन कर स्थापित हुई कि अपने धर्म, अपने विश्वास की किसी भी कीमत पर रक्षा करने से पीछे नहीं हटना चाहिये और सदैव उस पर दृढ़ रहना चाहिये। गुरु साहिब ने दिखाया कि विषम से विषम परिस्थिति में संयम व सहज का क्या महत्व है और आत्मबल कैसे सर्वश्रेष्ठ बल है जो परमात्मा की कृपा से प्राप्त होता है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत जब उपरोक्त सन्दर्भों में देखते हैं तो शहादत की सच्ची परिभाषा का ज्ञान होता है। गुरु साहिब की शहादत उस धर्म के लिये थी जो परमात्मा से जोड़ता है। मार्ग भिन्न हो सकता है, किन्तु गंतव्य एक ही है। उसे कोई भी नाम दिया जा सकता है। कोई राम कह रहा है, कोई ख़ुदा। औरंगजेब परमात्मा तक पहुंचने के उस मार्ग को अवरुद्ध कर रहा था। मुख्य प्रश्न यह था। तिलक व जनेव धर्म के प्रतीक थे, इसलिये औरंगजेब ने उन्हें निशाना बनाया था, जबकि उसका वास्तविक मन्तव्य हिंदू समाज को अपने विश्वास के साथ चलने से रोक कर उस मार्ग की ओर मोड़ना था जो इसलाम का मार्ग था। यह अधर्म था, जिसमें सत्ता का मद व निर्ममता भी शामिल हो गई थी। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी यह सिद्ध करने वाली थी कि बचता सदैव धर्म ही है और अधर्म का सदैव नाश होता है :

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥

(पन्ना १४२९)

बहु काल भयो सुलतानपुरे . . .

– बीबी गुरमीत कौर*

गुरु साहिबान की याद में स्थापित ऐतिहासिक धार्मिक स्थान सिक्ख धर्म में ख़ास महत्व रखते हैं। इसी तरह सुलतानपुर लोधी पंजाब प्रांत के कपूरथला ज़िले का प्राचीन नगर है, जिसका सिक्ख इतिहास में विशेष और उल्लेखनीय स्थान है। यह धरती बहुत भाग्यशाली है, क्योंकि श्री गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन के लगभग १४ वर्ष यहां गुज़ारे। इन १४ वर्षों के निवास के दौरान गुरु जी ने जनमानस को अकाल पुरख के साथ जोड़ा और कइयों का उद्धार किया। इस पवित्र स्थान पर ही 'तेरा-तेरा' की धुन उठी थी और जात-पांत के भेदभाव को ख़त्म करते हुए गुरु साहिब ने सर्वसांझीवालता का संदेश दिया था। गुरु जी ने मोदीखाने का कार्य-भार संभाल कर श्रमकारों का मार्गदर्शन किया। सुलतानपुर की पवित्र धरती से ही गुरु जी ने जगत-जलंदे के उद्धार के लिए भाई मरदाना जी को साथ लेकर उदासियों के लिए प्रस्थान किया था। भाषा विभाग की सुलतानपुर लोधी की सर्वे पुस्तक के अनुसार, ''मुसलमानों से पहले यहां सरबमानपुर नामक शहर आबाद था। यह कहा जाता है कि महमूद ग़ज़नवी के एक जरनैल सुलतान लोधी ने अपने नाम पर यहां एक कसबा बसाया था। एक रिवायत के अनुसार इस कसबे की बुनियाद पंजाब के सूबेदार वली मुहम्मद ख़ान, जिसे नासर-उद-दीन खान ने नियुक्त किया था, के पुत्र सुलतान खान ने रखी थी। बौद्धी साहित्य से ऐसा प्रतीत होता है कि पांचवी-छठी सदी ईसा पूर्व यहां तमसावन नामक एक ग़ैर-आबाद भारी जंगल था, जहां चौथी सदी ईसा पूर्व बौद्ध धर्म का केंद्र बना। सुलतानपुर लोधी को विशेष रूप से दौलत खान लोधी ने बसाया, जो कि इब्राहिम लोधी के शासन-काल के दौरान लाहौर का गवर्नर था।''

श्री गुरु नानक देव जी के समय के सुलतानपुर को और अधिक चहल-पहल लोधी वंश के संस्थापक बहलोल लोधी के रिश्तेदार दौलत खान लोधी ने प्रदान की, क्योंकि यह उसकी जागीर का मुख्य नगर था।

श्री गुरु नानक देव जी के सुलतानपुर लोधी में आने से पहले उनके पिता श्री महिता कालू जी उन्हें विभिन्न दुनियावी कामों पर लगाने का यत्न कर चुके थे, परंतु उनका मन दुनियावी कामों में नहीं लगता था। श्री गुरु नानक देव जी की बड़ी बहन बेबे नानकी जी का विवाह भाई जैराम जी के साथ हुआ और वे सुलतानपुर लोधी में ही निवास करते थे। जब भाई जैराम जी और बेबे नानकी जी को पता चला कि श्री गुरु नानक देव

*रिसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर—१४३००६, फोन : ८१९५९-१०१०६

जी का मन किसी कार-व्यवहार में नहीं लगता तो उन्होंने श्री महिता कालू जी को गुरु जी को सुलतानपुर भेजने हेतु कहा कि शायद उनका मन सुलतानपुर में लग जाये। परिवार ने भी उनको सुलतानपुर भेजना स्वीकार कर लिया। 'जन्म साखी साहित्य' के अनुसार जब श्री गुरु नानक देव जी तलवंडी से सुलतानपुर के लिए रवाना होने लगते हैं तो माता सुलक्खणी जी गुरु जी के पास उनको भी साथ लेकर जाने के लिए अर्ज़ करते हैं तो गुरु जी फरमान करते हैं, ''परमेसर कीए! हुण तां मैं जांदा हां, जे मेरे रुज़गार दी काई बणसी तां मै सदाइ लैसां।''[१] गुरु जी सुलतानपुर में अपने परिवार सहित जिस स्थान पर निवास करते थे, मौजूदा समय में उस पवित्र स्थान पर गुरुद्वारा गुरू का बाग़ सुशोभित है। भाई जैराम जी दौलत खान लोधी के मोदीखाने में मुख्य अधिकारी थे। मोदीखाना जागीरदारों की बहुत ही प्रतिष्ठा वाली संस्था समझी जाती थी, क्योंकि उस समय मालिया अनाज के रूप में ही वसूल किया जाता था। भाई कान्ह सिंघ नाभा मोदीखाने के अर्थ 'रसद आदि सामान का गोदाम और मोदी, जो रसद आदि सामान पहुंचाता है' करते हैं।

दौलत खान जागीरदार था और अपने पिता तातार खान के देहांत के बाद पंजाब का प्रशासक बना था। जब श्री गुरु नानक देव जी मोदीखाने में मोदी लगे उस समय दौलत खान के पास सुलतानपुर की जागीर थी। गुरु जी ने यह नौकरी भाई जैराम जी और बेबे नानकी जी की प्रेरणा से शुरू की थी। गुरु जी मोदीखाने में अनाज तौलते और अनाज का लेखा-जोखा रखते थे। उन्होंने यह काम बहुत मेहनत और ईमानदारी के साथ निभाया। गुरु जी से पहले वाले मोदी अनाज का एक बड़ा हिस्सा अपने पास रख लिया करते थे और अनाज कम तौलते थे, परंतु गुरु जी अनाज पूरा तौलते थे, जिससे लोगों को बहुत लाभ हुआ। मोदीखाने में सब तरह के लोगों का आना-जाना होने के नाते गुरु जी की महिमा चारों तरफ़ फैल गई। 'जन्म साखी साहित्य' के अनुसार, चौधरी भागीरथ, जो मलसीहा गांव का निवासी था और देवी का भक्त था, मोदीखाने में अनाज देने आया तो गुरु जी के विचारों से प्रभावित होकर सिक्ख बन गया। गुरु जी की महानता का ज्ञान न होने के कारण उनसे ईर्ष्या करने वाले लोग नवाब दौलत खान के पास गुरु जी के काम के प्रति शिकायतें करते थे, परंतु हिसाब करने पर कभी भी हिसाब में कम-ज्यादा नहीं निकलता था। नवाब दौलत खान श्री गुरु नानक देव जी की शख्सियत से प्रभावित होकर गुरु जी का मुरीद बन गया। उसने ईर्ष्यालु लोगों द्वारा की जाने वाली शिकायतें सुननी बंद कर दीं। वो शिकायतें करने वालों को यही कहता था कि सुलतानपुर के भाग्य हैं कि ऐसा मोदी मिला है। गुरु जी मोदीखाने में आने वाले गरीबों और ज़रूरतमंदों का विशेष ध्यान रखते थे। किसी गरीब की लड़की का विवाह होता तो गुरु जी खुद दिलचस्पी लेकर कार्य संपूर्ण करवाते तथा किसी वस्तु की ज़रूरत पड़ने पर उसे पूरा करते। मोदीखाने का कार्य करते समय श्री गुरु नानक

देव जी के पास जो भी फ़कीर, गरीब, कमज़ोर और मुहताज आता आप उनकी ज़रूरतें पूरी करते। यह ख़बर पूरे इलाके में फैल गई कि गुरु जी शाही मोदीखाने को लुटा रहे हैं और काम करते हुए भी समाधि लगा कर बैठ जाते हैं :

जो भूखा पिआसा होइ चल आवै दिआल के।
भर पलड़ा तिस देह, तराजू ढाल के।[२]

उस पवित्र स्थान पर गुरु जी की याद में गुरुद्वारा हट्ट साहिब सुशोभित है, जहां गुरु जी बतौर मोदी काम करते समय अनाज तौलते थे। इसी याद के अनुसार अलग- अलग आकार के छोटे-बड़े बांट मौजूद हैं, जो शीशे के बक्से में संभाले हुए हैं। सुलतानपुर में रहते हुए श्री गुरु नानक देव जी की रोज़मर्रा की क्रिया से संबंधित 'जन्म साखी साहित्य' में मिलता है कि काली वेईं श्री गुरु नानक साहिब की चरण-स्पर्श प्राप्त वह ऐतिहासिक नदी है, जिसमें गुरु साहिब चौदह वर्ष के निवास के दौरान रोज़ाना पहर रात रहते स्नान करते तथा इसके किनारे बैठ कर अकाल पुरख की भक्ति में लीन हो जाते थे। वेईं नाम की दो नदियां हैं— काली वेईं और सफ़ेद वेईं। भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार, ''काली वेईं ज़िला होशियारपुर की तहसील दसूहा के गांव टेरकिआना के छंब (ताल) में से निकल कर रियासत कपूरथला के इलाके में से गुज़रती हुई सुलतानपुर से आगे जाकर दरिया सतलुज में (हरीके पत्तन से लगभग दस मील उत्तर दिशा में) जा मिलती है। सफ़ेद वेईं ज़िला होशियारपुर के नगर गढ़शंकर से निकलकर, ज़िला होशियारपुर— जलंधर की सीमाओं में से बल खाती हुई रियासत कपूरथला के क्षेत्र से गुज़र कर ज़िला जलंधर की ज़मीन में सतलुज दरिया के साथ जा मिलती है।''

गुरु जी भाई मरदाना जी के साथ मिल कर काली वेईं नदी के किनारे बैठ कीर्तन में जुड़ते थे और संगत कीर्तन श्रवण करने के लिए आ जुड़ती थी। इसके बाद पूरा दिन मोदीखाने में रसद संभालते, रकम इकट्ठी करते और हिसाब कर वापिस घर लौटते। इस सब कार-व्यवहार में एक पल भी वाहिगुरु का नाम नहीं भुलाते थे। गुरु साहिब ईश्वरीय-लगन में इतने मग्न थे कि अनाज तौलते हुए मुख से 'तेरा-तेरा' उचारण करते गए और मोदीखाने में पड़ा कई मन अनाज ज़रूरतमंदों में बांट दिया। जब यह ख़बर नवाब को मिली तो उसने भाई जैराम जी को बुलाया और हिसाब करने के लिए कहा। दौलत खान के मुंशियों ने हिसाब-किताब किया तो मोदीखाने का सारा हिसाब ठीक निकला :

दौलत ख़ान तब बूझिआ नानक है बड साध।
जिउं जिउं खरचे तिउं बढे, संतन मता अगाध॥[३]

'जन्म साखी साहित्य' के अनुसार गुरु जी ने लेखा होने के पश्चात् कहा कि अब आप अपना काम संभालो, मैं आपका काम नहीं करता। जिस स्थान पर गुरु साहिब का लेखा नवाब के मुंशियों ने लिया था, मोदीखाने के अनाज की पड़ताल हुई थी और हिसाब-किताब रखने वाली बहियों को जांचा गया था उस स्थान पर गुरुद्वारा कोठरी साहिब सुशोभित है। यह एक

छोटा-सा घरनुमा गुरुद्वारा है। एक दिन गुरु जी नित्तनेम के अनुसार वेईं नदी में स्नान करने गए। वेईं नदी में प्रवेश करने के बाद वे तीन दिन आलोप रहे और तीसरे दिन बाहर आए। शहर में शोर मच गया कि गुरु साहिब डूब गए हैं। भाई जैराम जी और बेबे नानकी जी भी बहुत घबराए। जब नवाब को पता चला तो वह भाई जैराम जी को साथ लेकर नदी पर गया और गुरु साहिब को ढूंढने की कोशिश की, परंतु कुछ पता नहीं चला। गुरु जी की इस अवस्था का ज़िक्र 'जन्म साखी साहित्य' में भिन्नताओं के साथ मिलता है :—

'मिहरबान वाली जन्म साखी' के अनुसार :—

''तब करते पुरखि ओहु भैस दुहाई। दुहाइ करि कटोरा दूध का भरिआ, भरि भरि हाथि लीआ। हाथि लेकरि बाबे नानक जी कउं कहिआ, जि ए नानक! तूं दूध का कटोरा एहु पीउ।' . . . तब करते पुरखि कहिआ जि ए नानक! एहु दूधु नाही जि तू दूधु जानता है। एहु तुम कउं नाम सिमरण का, भगति भाव का, सत संतोख का, सील संजम का पिआला मिलता है।''

'विलायत वाली जन्म साखी' के अनुसार :—

''आगिआ परमेसर की नालि, सेवक लै गए दरगाह परमेसर की। सेवक जाइ अरज़ कीती जी नानक हाजरु है . . . अंम्रित का कटोरा भरि भरि आगिआ नाल मिलिया। हुकमु होआ : नानक! एहु अंम्रित मेरे नाम का पिआला है, तू पिउ।''

'भाई मनी सिंघ जी वाली जन्म साखी' के अनुसार :—

''तां बाबे नूं आगिआ होई तुसीं जाओ, अर तीरथां पर जाइके सतनाम दा चक्कर फिराओ। तब बाबा वेईं तों बाहर आइआ अर एहो कहदा है कि ना कोई हिंदू है न मुसलमान है।''

जिस पवित्र स्थान से गुरु साहिब ने वेईं नदी में प्रवेश किया उस स्थान पर गुरुद्वारा बेर साहिब सुशोभित है। गुरुद्वारा साहिब की इमारत उस जगह पर सुस्थित है जहां गुरु जी बैठ कर नाम-सिमरन किया करते थे। गुरुद्वारा बेर साहिब में एक पुरातन बेरी है, जिसके बारे में महाकवि भाई संतोख सिंघ 'श्री गुर नानक प्रकाश' में लिखते हैं कि गुरु साहिब ने मोदीखाने से चल कर वेईं नदी के किनारे आकर दातुन की और फिर वह धरती में गाड़ दी जो कि वृक्ष बन गई और अब तक वह सुंदर बेरी के रूप में खड़ी है :

आपन ते चल नीरके तीर पै दंतन धावन आनि करी।
गाड दई धर, होति भयो तरु है अब ले बर सो बदरी।

'सिक्ख धर्म विश्व कोश' के अनुसार गुरुद्वारा बेर साहिब की इमारत का शिलान्यास ५ फरवरी, १९३७ ई. को बागड़ियां के भाई अरजन सिंघ ने किया था और २६ जनवरी, १९४१ ई. को पटियाला के महाराजा यादविंदर सिंघ ने इसके मुकम्मल होने पर इसे संगत के दर्शन के लिए भेंट कर दिया था। गुरुद्वारा साहिब में श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश-पर्व बड़ी श्रद्धा के साथ

मनाया जाता है और संगत दूर-दूर से चल कर यहां पहुंचती है।

गुरु जी ने लंबी सोच-विचार करने के बाद निर्णय लिया कि वे अब सुलतानपुर में नहीं रहेंगे और संसार को झूठे और अंध-श्रद्धा वाले खोखले विचारों से मुक्त करवाने के लिए दूर-दूर स्थानों की उदासियां (यात्रा) करेंगे। गुरु साहिब किसी दृढ़ विश्वास को अमली जामा पहनाना चाहते थे। उनका उद्देश्य केवल अलग-अलग जातियों में परस्पर मेल-मिलाप कराना ही नहीं था, वे एक 'निर्मल पंथ' की स्थापना करने आए थे, जिसका आधार 'एक निरंकार में दृढ़ विश्वास' था। धरती पर सत्य और समानता का भाईचारा स्थापित करना, मानवता को एक परमात्मा के लड़ लगाना गुरु जी का मुख्य मंतव्य था। इसी मंतव्य की पूर्ति हेतु गुरु जी ने भाई मरदाना जी को साथ लेकर सुलतानपुर की पवित्र धरती से चारों दिशाओं में जाकर उदासियां की। भाई गुरदास जी की वारों के अनुसार :

बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई।
चढ़िआ सोधणि धरति लुकाई॥

(वार १:२४)

''गुरु साहिब ने अनुभव किया कि भाई मरदाना जी को रबाब की ज़रूरत है। रबाब तंतु और तार का एक साज़ है, जो आम नहीं मिलता था। खोज करने पर यह पता चला कि सुलतानपुर की दक्षिण-पश्चिम दिशा में एक गाँव भरोआण है, वहां भाई फरिंदा के पास रबाब है। श्री गुरु नानक साहिब ने भाई मरदाना जी से कहा कि बहन बेबे नानकी जी से कुछ रुपए लेकर वे भाई फरिंदा से मिलें और रबाब ले आएं। भाई फरिंदा खुद सुलतानपुर आकर गुरु जी को रबाब दे गये।''[५]

श्री गुरु नानक देव जी पाखंड, भेस, वहम, जब्र और जुल्म में से बाहर निकाल कर जनसाधारण को सही मार्ग पर ले जाने के लिए भाई मरदाना जी को साथ लेकर उदासियों के लिए चल पड़े :

गुरु साहिब ने अकाल पुरख का हुक्म प्रवान किया और मानवता के भले के लिए चारों दिशायों में सत्य-धर्म का प्रचार किया। सुलतानपुर लोधी की धरती को सिक्ख महान पवित्र स्थान का दर्जा देते हैं।

हवाला-सूची :

१. भाई वीर सिंघ (संपा.), पुरातन जन्म साखी, खालसा समाचार, श्री अमृतसर, १९७१, पृष्ठ ३७.

२. सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश, भाग-१, उत्तम सिंघ (भाटिया) (संपा.), भाषा विभाग, पंजाब, १९९९, पृष्ठ १०७

३. वही, महिमा प्रकाश, भाग-१, पृष्ठ १०७

४. महाकवि भाई संतोख सिंघ, श्री गुर नानक प्रकाश, किरपाल सिंघ (संपा.), धर्म प्रचार कमेटी, श्री अमृतसर, २००६, अध्याय २८, पृष्ठ ६७०

५. किरपाल सिंघ, जन्म साखी परंपरा, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९६९, पृष्ठ २४

ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही॥

*-डॉ. मनजीत कौर**

सर्वधर्म समन्वय के प्रतीक पावन ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में धर्म, जाति, संप्रदाय आदि के भेदभाव से परे ३६ महापुरुषों की बाणी समान आदर-भाव के साथ अंकित है और साथ ही पारब्रहम परमेश्वर अकाल पुरख वाहिगुरु जी की प्रेमा-भक्ति, ब्रह्मज्ञान, जीवन की अटल सच्चाई, आध्यात्मिकता, लोक-परलोक के सम्पूर्ण सुख समाहित हैं। चिन्तकों के चिन्तनानुसार जिस प्रकार आकाश को मुट्ठी में लेना असंभव है, सूर्य की दूरी को गजों से नहीं नापा जा सकता, अनंत सागर की गहराई की तह में से आबदार मोती निकालना मुश्किल है, ठीक उसी प्रकार इस पुनीत ग्रंथ की महिमा को कलमबद्ध करना असम्भव है।

इस पावन ग्रंथ में जिन महापुरुषों की बाणी सुशोभित है उनमें से महाराष्ट्र के भक्त नामदेव जी के १८ रागों ६१ शबद संकलित हैं।

भक्त नामदेव जी का जन्म अधिकतर विद्वानों द्वारा १२७१ ई. में नरसी बामणी, जिला सतारा, महाराष्ट्र में हुआ माना गया है। उनके पिता का नाम श्री दम सेती (श्री दाम सेठ) तथा माता का नाम श्रीमती गोनाबाई था। आपके पिता दर्जी थे, साथ ही वस्त्र-रंगाई का काम भी करते थे। ये छीपा (छींबा) वर्ग से माने जाते हैं, जो उस समय में जाति भेदभाव के अन्तर्गत तथा कथित निम्न जाति मानी जाती थी। *''सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नही कोई॥''* का शंखनाद करने वाले भक्त नामदेव जी की पावन बाणी को श्री गुरु नानक देव जी ने एकत्र किया और पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने तरतीब से उनकी बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित किया।

भक्त नामदेव जी बड़े फख्र से अपनी निम्न मानी जाने वाली जाति का जिक्र अपनी बाणी में करते हैं :

छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला॥
संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला॥

(पन्ना ४८६)

इस शबद से स्पष्ट हो जाता है कि भक्त नामदेव जी ने नेक कर्म एवं गुणों की महत्ता दर्शायी है। सम्पूर्ण श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इस भाव की पुष्टि हुई है कि जातिगत अभिमान व्यर्थ है। ईश्वर की दरगाह में किसी की जाति नहीं पूछी जायेगी, अपितु प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों पर फैसला होना है। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि व्यक्ति के अंदर की ज्योति को पहचानो, उसकी जाति मत पूछो, क्योंकि प्रभु-आशयानुसार में कोई जाति नहीं होती :

जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे॥

(पन्ना ३४९)

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी ने तो जाति-अभिमानियों को मूर्ख और गंवार माना है, क्योंकि जातिगत अभिमान अनेक विकारों की उत्पत्ति का कारण बन जाता है :

जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥
(पन्ना ११२७)

भक्त नामदेव जी की युगीन परिस्थितियों में जातिगत भेदभाव शिखर पर था। उस समय हिंदू तथा मुस्लिम दो प्रमुख धर्म थे और दोनों ही स्वयं को श्रेष्ठ तथा सर्वोत्तम मानते हुए एक दूसरे को तिरस्कृत करते थे। भक्त नामदेव जी ज्ञान को श्रेष्ठ मानते हुए धार्मिक कट्टरता से मुक्त एक ईश्वर में विश्वास रखने वाले को तथा मंदिरों-मस्जिदों की कैद से मुक्त मानवतावादी दृष्टिकोण रखने वाले को ही सच्चा इंसान मानते हुए स्पष्ट करते हैं कि :

हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥
(पन्ना ८७५)

भक्त नामदेव जी गुरु की कृपा और ईश्वर के विश्वास को सर्वोपरि मानते हुए गुरबाणी आशयानुसार गुरु को ही प्रभु-प्राप्ति एवं मुक्ति का मार्ग मानते हैं। अनेक धर्मों में संसार को भवसागर माना गया है। विकार इस संसार रूपी सागर में उठती प्रचण्ड लहरें हैं और इनसे बचने की युक्ति इन्सान के पास नहीं है। यह युक्ति सतिगुरु के पास है और सतिगुरु की प्राप्ति केवल ईश्वर की अपार कृपा से ही सम्भव है। भक्त नामदेव जी की प्रभु-चरणों में फरियाद है :

होहु दइआलु सतिगुरु मेलि तू मो कउ ॥
पारि उतारे केसवा ॥ *(पन्ना ११९६)*

भक्त नामदेव जी के चिन्तनानुसार गुरु की शरण में आने का भाव है कि अपने मन को पूर्णतया गुरु-चरणों में समर्पित कर देना अर्थात् गुरु-आदेशानुसार चलना, जिसकी बदौलत अर्थात् परिणामस्वरूप हृदय रूपान्तरित हो जाता है। जीवन-मनोरथ की सम्पूर्ण सफलता गुरु-दर्शाये मार्ग पर मन-वचन-कर्म से चलने से ही सम्भव है और गुरु की शरण प्रभु की रहमत से ही नसीब होती है। इस संदर्भ में भक्त नामदेव जी का कथन है :

जा के मसतकि लिखिओ करमा ॥
सो भजि परि है गुर की सरना ॥
कहत नामदेउ इहु बीचारु ॥
इन बिधि संतहु उतरहु पारि ॥ *(पन्ना ११६५)*

भक्त नामदेव जी-कालीन परिस्थितियां अति कष्टप्रद थीं। निम्न मानी जाने वाली जाति के लोगों को मंदिर आदि धर्म-स्थल पर जाकर पूजा-पाठ करने का अधिकार प्राप्त नहीं था। इस प्रकार की अवस्था में ईश्वर-मिलाप की उमंग भक्त जी की प्रेमा-भक्ति की चरम अवस्था का उद्घोष करती है। इस संदर्भ में उनकी बाणी से स्पष्ट होता है कि ऐसी परिस्थितियों में भक्त जी के हृदय में दृढ़ विश्वास पैदा होता है और उसकी समस्त शंकाएं एवं दुविधाएं समूल नष्ट हो जाती हैं :

साई प्रीति जि आपे लाए ॥
गुर परसादी दुबिधा जाए ॥ *(पन्ना ११६४)*

वैसे भी गुरबाणी में शंकालु जीव को मलिन माना गया है। श्री गुरु अमरदास जी का पावन फरमान है कि कर्मकाण्डों के माध्यम से शंका दूर

नहीं होती और न ही ज्ञान उत्पन्न होता है। भ्रम में फंसे जीव की मलिनता दूर करने का एकमात्र उपाय गुरु-कृपा से स्वाभाविक रूप से ज्ञान की प्राप्ति मानते हुए श्री गुरु अमरदास जी 'अनंदु साहिब' बाणी में फरमान करते हैं :

करमी सहजु न ऊपजै
विणु सहजै सहसा न जाइ ॥
नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥
सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥
मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥
कहै नानकु गुर परसादी
सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ ॥ (पन्ना ९१९)

शंकाओं का निवारण अथवा विकारों से मुक्ति गुरु-कृपा से ही मुमकिन है। यही मनुष्य की देवत्व प्राप्त करने की युक्ति है। भक्त नामदेव जी का इस संदर्भ में फरमान है :

नर ते सुर होइ जात निमख मै
सतिगुर बुधि सिखलाई ॥
नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ
सो अवखध मै पाई ॥ (पन्ना ८७३)

गुरु से प्राप्त प्रभु-नाम-साधना से ही इस संसार रूपी भवसागर से पार उतरना सहज हो जाता है :

भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥
जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥ (पन्ना ११६४)

भक्त नामदेव जी की बाणी में जहां गुरु का महत्व दर्शाया गया है वहीं नाम-सिमरन को भी प्रभु-प्राप्ति का मुख्य साधन माना गया है, क्योंकि नाम-सिमरन के फलस्वरूप ईश्वरीय गुणों का हृदय-घर में प्रवेश होना प्रारम्भ हो जाता है, विकार समूल नष्ट हो जाते हैं और नाम-सिमरन अभ्यासी के अन्त:करण में ज्ञान का प्रकाश होता है, 'मैं, मेरी' की भावना पूर्णतया समाप्त हो जाती है अर्थात् अहंकार का स्थूल और सूक्ष्म रूप दोनों ही तिरोहित हो जाते हैं। नाम-सिमरन में लीन हुआ कोई व्यक्ति पूर्व में किये गए पाप-कर्मों से भी छुटकारा पा लेता है और पूर्णतया दोष-मुक्त हो जाता है। इस सच्चाई को गहन विश्वास से साथ अभिव्यक्त करते हुए भक्त नामदेव जी का कथन है :

कउन को कंलकु रहिओ राम नामु लेत ही ॥
पतित पवित भए रामु कहत ही ॥
(पन्ना ७१८)

भक्त नामदेव जी नाम को ही सहारा मानते हैं, जैसे अंधे को एक लकड़ी (छड़ी) का सहारा होता है, जो मार्ग में आई बाधाओं से सुरक्षित रखती है। नाम मनुष्य के लिए जीवनाधार है। नाम-विहीन व्यक्तियों से भक्त नामदेव जी कोई सरोकार नहीं रखते। वे धर्मपरायण व्यक्ति और नाम-सिमरन-अभ्यासी को ही अपना सच्चा साथी मानते हैं। जिनके पास हरि-सिमरन नहीं, उनका तो दर्शन करना भी भक्त नामदेव जी को प्रवान नहीं। अपने हृदय-उद्गारों को वे स्पष्ट करते हैं :

जो न भजंते नाराइणा ॥
तिन का मै न करउ दरसना ॥ (पन्ना ११६३)

प्रभु-नाम ही भक्त नामदेव जी के लिए सर्वस्व है। वास्तव में प्रभु-नाम बेआसरों का आसरा है, निराश्रितों का आश्रय है। स्वयं को गरीब, निम्न और बेसहारा मानते हुए, प्रभु-नाम

को ही सर्वोपरि मानते हुए भक्त नामदेव जी पावन फरमान करते हैं :

मैं अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥
मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥
(पन्ना ७२७)

स्वयं को निम्न से निम्न मानते हुए अपनी 'मैं' को पूर्णतया मिटा कर प्रभु की शरण में जो आता है, उसके लिए प्रभु का नाम ही जीवन का आधार बन जाता है। वह निरंतर सही दिशा में चलते हुए, नेक कर्म करते हुए जीवन-मनोरथ को सफल कर लेता है। केवल अपने को ही नहीं, अपितु अपने आस-पास विचरण करने वालों को, सगे-संबंधियों को भवसागर से पार उतारने हेतु मानो पुल बन जाता है।

प्रेमा-भक्ति एक ऐसी कारगर युक्ति है जो समस्त समाज को उलझनों से बचाने तथा उच्च रूहानी एवं आदर्श मंजिलें तय करने का सामर्थ्य प्रदान करती है।

इस संदर्भ में जहां भक्त नामदेव जी का आज्ञाकारी एवं मधुर स्वभाव उजागर होता है इसके साथ ही उनकी सहजता, भोला-भाव, अथाह प्रेमा-भक्ति के भी दर्शन होते हैं।

प्रभु के साक्षात दर्शन एवं पूर्ण प्रसन्नता की प्राप्ति हेतु भक्त नामदेव जी के समान श्रद्धा, विश्वास, प्रेम होना अति आवश्यक है। इस संदर्भ में भक्त नामदेव जी का फरमान है :

दूधु कटोरै गडवै पानी ॥
कपल गाइ नामै दुहि आनी ॥ १ ॥
दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥
दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥
नाही त घर को बापु रिसाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सुोइन कटोरी अंम्रित भरी ॥
लै नामै हरि आगै धरी ॥२ ॥
एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥
नामे देखि नराइनु हसै ॥३ ॥
दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ॥
नामे हरि का दरसनु भइआ ॥ (पन्ना ११६३)

समस्त कर्मकाण्डों का समूल खण्डन करते हुए भक्त नामदेव जी सम्पूर्ण जप-तप, तीर्थ-स्नान, हठयोग और अनेक प्रकार की कठिन साधना से प्रभु-भक्ति को श्रेष्ठ मानते हैं। उनके चिन्तनानुसार :

बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै
अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ॥
असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै
राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥१ ॥
छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥
हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥ (पन्ना ९७३)

प्रभु-सिमरन के महत्व के साथ-साथ भक्त नामदेव जी ने हृदय की पवित्रता पर विशेष बल देते हुए स्पष्ट किया है कि अगर मनुष्य का हृदय शुद्ध नहीं तो किसी भी ध्यान अथवा जप-तप से आत्मिक लाभ नहीं होने वाला। व्यर्थ के अर्थात् फोकट कर्मों से बचने की प्रेरणा देते हुए भक्त नामदेव जी का संदेश है :

काहे कउ कीजै धिआनु जपंना ॥
जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥ (पन्ना ४८५)

भक्त नामदेव जी की बाणी बहुआयामी है।

उनका अनुभवी दायरा बहुत विशाल और गहन है।

भक्त नामदेव जी की बाणी में गृहस्थ धर्म की प्रधानता है, जहां कर्म करते हुए चित्त को ईश्वर के साथ जोड़ कर रखने की प्रेरणा है। इस संदर्भ में आपका बड़ा सुंदर उपदेश है, जिसमें अपनी किरत करते हुए ईश्वर को श्वास-श्वास स्मरण रखने की समझाईश है :

मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥
मपि मपि काटउ जम की फासी ॥. . .
रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ ॥
राम नाम बिनु घरीउ न जीवउ ॥ *(पन्ना ४८५)*

भक्त नामदेव जी ने बाणी में परमेश्वर के अनेक नामों का उच्चारण किया है, जैसे माधो, बीठल, मुरारी, हरि, राम, केसो, नराइण, सावल आदि। इसका अभिप्राय यह नहीं कि वे अवतारवाद का मण्डन कर रहे हैं। वे निर्गुण के उपासक हैं। उनका बीठल-प्रभु सर्वत्र समाया हुआ है। प्रभु-स्वरूप का वर्णन करते हुए आपका फरमान है :

ईभै बीठलु ऊभै बीठलु
बीठल बिनु संसारु नही ॥
थान थनंतरि नामा प्रणवै
पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥ *(पन्ना ४८५)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पूर्ण बाणी सर्वधर्म समन्वय की प्रतीक है, जो समूची मानवता को आपसी प्रेम, सौहार्द, भ्रातृ-भावना का संदेश देते हुए कण-कण में परमेश्वर की ज्योति पहचानने की सीख देती है। इस संदर्भ में भक्त नामदेव जी की पावन बाणी का एक उदाहरण यहां उल्लेखनीय है :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥ १ ॥रहाउ ॥
एकल माटी कुंजर चीटी
भाजन हैं बहु नाना रे ॥
असथावर जंगम कीट पतंगम
घटि घटि रामु समाना रे ॥१ ॥
एकल चिंता राखु अनंता
अउर तजहु सभ आसा रे ॥
प्रणवै नामा भए निहकामा
को ठाकुरु को दासा रे ॥ *(पन्ना ९८८)*

इस प्रकार भक्त नामदेव जी की बाणी अनुभूति एवं अभिव्यक्ति (भाव एवं कला) पक्ष से अद्वितीय है। जहां उनकी बाणी में अनुभूति की गहराई है, एक ईश्वर की उपासना, गुरु की महत्ता, प्रेमा-भक्ति, प्रेम, समता, भ्रातृ-भावना, मानवतावादी दृष्टिकोण के दर्शन सर्वत्र होते हैं, वहीं दूसरी ओर अभिव्यक्ति पक्ष भी अति सुंदर है। संगीतात्मकता, प्रकृति-निरूपण, बिम्ब, प्रतीक, योजना, मधुरता, सुंदर उपमाएं, विविध अलंकारों का प्रयोग, शांत व करुण वात्सल्य एवं भक्ति-रस के अनुपम उदाहरण हृदय-घर में नवीन चेतना का संचार करते हैं। आवश्यकता है तो बस, उनकी पावन बाणी से दिशा-निर्देश लेकर, उस पर अमल कर बेशकीमती जीवन को धर्म एवं कर्म पक्ष से सफल बनाने की!

भक्त नामदेव जी : नाम-सिमरन और सहज-साधना की अवधारणा

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

भक्ति आंदोलन को स्वरूप प्रदान करने में जिन संतों-भक्तों ने विशेष भूमिका निभाई, उनमें भक्त नामदेव जी का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह भक्त नामदेव जी की मानवतावादी दृष्टि ही थी, जिसके कारण गुरु साहिबान ने इनकी पवित्र बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया। यहां आपके ६१ पद (शबद) सम्मिलित हैं, जो १८ रागों में दर्ज हैं।

जीवन-यात्रा : परम्परा और ज्ञात स्त्रोतों के आधार पर यह स्वीकार किया जाता है कि भक्त नामदेव जी का जन्म महाराष्ट्र राज्य के सतारा जिले के नरसी बामनी नामक गांव में सन् १२७१ ई. में हुआ। आपके पिता का नाम श्री दाम शेट्टी (श्री दम सेती, श्री दामसेठ) और माता का नाम श्रीमती गोनाबाई (राजाई) था। मात्र आठ वर्ष की आयु में आपका विवाह श्री गोविंद शेट्टी की पुत्री माता राज बाई के साथ हुआ। आपके घर पांच संतानों ने जन्म लिया। नारायण, महादेव, गोविंद और विट्ठल आपके चार पुत्र थे। आपकी एक पुत्री भी थी, जिसका नाम 'लिम्बा बाई' था।

भरे-पूरे परिवार वाले भक्त नामदेव जी अपने सांसारिक कर्त्तव्यों को निभाते हुए भी आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित रहे। आप 'वारकरी संप्रदाय' से संबंधित माने जाते हैं, जिसकी स्थापना आपके गुरु-भाई संत ज्ञानेश्वर ने की थी। आप और संत ज्ञानेश्वर संत विसोबा खेचर के शिष्य थे। वारकरी सम्प्रदाय में विट्ठल (बीठल) के रूप में प्रभु की आराधना होती है। विट्ठल की उपासना में भक्त नामदेव जी का फरमान है :

ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥
थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥
(पन्ना ४८५)

वैसे तो भक्त नामदेव जी की कार्य-स्थली महाराष्ट्र का नगर पंढरपुर था, परंतु आप अपने गुरु-भाई और मित्र संत ज्ञानेश्वर के साथ संपूर्ण भारत का देशाटन करते रहे। कुछ समय पश्चात् संत ज्ञानेश्वर का देहांत हो गया। इससे आपका मन ऐसा उचाट हुआ कि आप पंढरपुर में और अधिक न रह सके। आप पंजाब आ गए और कई स्थानों का भ्रमण करने के पश्चात् आपने 'घुमाण' गांव को अपने निवास के लिए चुना। मान्यता है कि

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

भक्त नामदेव जी घुमाण में १८ वर्ष तक रहे।

सन् १३५१ ई. में अस्सी वर्ष की आयु पूरी कर आप प्रभु-चरणों में जा शोभित हुए।

सहज-साधना : गुरमति में भक्ति के सहज रूप को स्वीकार किया गया है। यहाँ किसी भी प्रकार के अनुष्ठान, आयोजन, प्रबंध आदि करने की कोई आवश्यकता नहीं बताई गई। सहज भाव से हरि के नाम का सिमरन करना है और उससे प्रेम करना है। संतों-भक्तों ने इसे सहज-साधना कहा है।

भक्त नामदेव जी भी सहज-साधना को ही उचित एवं श्रेष्ठ मानते हैं। सहज-साधना की पुष्टि के संबंध में आपका एक प्रसंग भक्त कबीर जी की जुबानी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। इस प्रसंग में आपके मित्र भक्त त्रिलोचन जी आपसे पूछते हैं कि हे मित्र! तू माया-मोह में फंसा काम करता रहता है, सिमरन में चित्त क्यों नहीं लगाता ?

नामा माइआ मोहिआ कहै तिलोचनु मीत ॥
काहे छीपहु छाइलै राम न लावहु चीतु ॥
(पन्ना १३७५)

उत्तर में भक्त नामदेव जी कहते हैं कि मैं हाथ-पाँव से सारे काम करता हूं, परंतु चित्त प्रभु के साथ जोड़ रखा है :

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥
(पन्ना १३७५)

इस प्रकार भक्त नामदेव जी सहज-साधना का अत्यंत स्पष्ट रूप सामने रखते हैं। मनुष्य को अपने सांसारिक क्रिया-कलाप करते रहना है, परंतु हृदय सदा अकाल पुरख से जुड़ा रहे, ध्यान हमेशा प्रभु में लगा रहे। वास्तव में सहज-साधना कुछ ऐसी है जैसे कोई बालक मेला तो देखे, लेकिन पिता की उंगली पकड़ कर।

भक्त नामदेव जी ने बहुत सुंदर और सटीक उदाहरण देते हुए सहज-साधना के स्वरूप को स्पष्ट किया है। आपका कथन है :

आनीले कागदु काटीले गूडी
आकास मधे भरमीअले ॥
पंच जना सिउ बात बतऊआ
चीतु सु डोरी राखीअले ॥ (पन्ना ९७२)

अर्थात् बालक कागज़ लेकर आते हैं, उसे काट कर पतंग बनाते हैं और फिर उसे आकाश में उड़ाते हैं। (पाँच) दोस्तों-मित्रों से बातें भी करते रहते हैं, परंतु उनका ध्यान हमेशा पतंग की डोरी पर रहता है।

आनीले कुंभु भराईले ऊदक
राज कुआरि पुरंदरीए ॥
हसत बिनोद बीचार करती है
चीतु सु गागरि राखीअले ॥ (पन्ना ९७२)

राजकुमारियों जैसी कन्याएँ घड़ा लेकर आती हैं, पनघट पर पानी भरकर ले जाती हैं, रास्ते में हंसती-खेलती हैं, मज़ाक करती हैं,

लेकिन उनका ध्यान हमेशा सिर पर रखी गागर में लगा रहता है कि कहीं वह गिर न जाये।

मंदरु एकु दुआर दस जा के
गऊ चरावन छाडीअले॥
पांच कोस पर गऊ चरावत
चीतु सु बछरा राखीअले॥ (पन्ना ९७२)

दस दरवाजे वाले बड़े घर के लोग गऊओं को चरने के लिए भेजते हैं। गऊएं पांच कोस दूर जंगल में चर रही होती हैं, परंतु उनका ध्यान घर में बंधे अपने बछड़े में ही रहता है।

कहत नामदेउ सुनहु तिलोचन
बालकु पालन पउढीअले॥
अंतरि बाहरि काज बिरूधी
चीतु सु बारिक राखीअले॥ (पन्ना ९७२)

अर्थात् भक्त नामदेव जी कहते हैं, सुनो त्रिलोचन! घर में स्त्रियां अपने बालक को पालने में लेटा देती हैं। वे अंदर-बाहर कई काम करती-फिरती हैं, लेकिन उनका ध्यान अपने बच्चे में ही लगा रहता है।

इस प्रकार भक्त नामदेव जी समझाते हैं कि हमें दुनिया के सारे कार्य करने हैं, परंतु चित्त प्रभु की ओर रखना है। प्रभु का ध्यान कैसे करना है, उसमें चित्त कैसे लगाना है, इसे भी भक्त नामदेव जी ने बड़े सुंदर प्रतीकों के माध्यम से समझाया है :

नाद भ्रमे जैसे मिरगाए॥
प्रान तजे वा को धिआनु न जाए॥ १॥
ऐसे रामा ऐसे हेरउ॥
रामु छोडि चितु अनत न फेरउ॥ १॥रहाउ॥
जिउ मीना हेरै पसूआरा॥
सोना गढते हिरै सुनारा॥ २॥
जिउ बिखई हेरै पर नारी॥
कउडा डारत हिरै जुआरी॥ (पन्ना ८७३)

अर्थात् जैसे नाद के भ्रम में भटकता हुआ मृग प्राण तो गंवा देता है, परंतु उस नाद से अपना ध्यान नहीं हटाता, जैसे मछली पकड़ते समय मछुआरे का ध्यान मछली में लगा रहता है, जैसे सोना गढ़ते हुए सुनार का ध्यान सोने में लगा रहता है जैसे व्यभिचारी व्यक्ति पराई नारी को देखता है और जैसे कौड़ी फेंक कर जुआरी कौड़ी को देखता है कि वह जीता या नहीं, इसी तरह मनुष्य को प्रभु को देखना है, उसमें अपना ध्यान लगाना है, उसमें अपना चित्त लगाना है।

यहां भक्त नामदेव जी एक चेतावनी भी देते हुए चलते हैं कि ध्यान केवल प्रभु में लगाना है, प्रभु को छोड़कर किसी और चीज में नहीं। प्रभु में चित्त लगाने से ही शांति मिलेगी, मुक्ति प्राप्त होगी। अन्य सांसारिक वस्तुओं से लिव लगाई तो कष्ट ही कष्ट हासिल होगा।

भक्त नामदेव जी इस स्थिति का सुंदर खाका खींचते हैं :

जिउ मधु माखी संचै अपार॥

मधु लीनो मुखि दीनी छारु ॥
गऊ बाछ कउ संचै खीरु ॥
गला बांधि दुहि लेइ अहीरु ॥ (पन्ना १२५२)

भक्त नामदेव जी स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य माया में चित्त लगाये रखता है, माया एकत्र करता है। वो बाद में दुख का कारण बनती है, और किसी काम नहीं आती।

भक्त जी का कथन है— मधुमक्खी बड़ी मेहनत करके बहुत शाहद इकट्ठा करती है, परंतु वह शहद मुंह में छार डालकर उससे छीन लिया जाता है। इसी प्रकार गाय अपने बछड़े के लिए दूध संचित करके रखती है, परंतु अहीर गाय का गला बांध कर सारा दूध दुह लेता है। इसी प्रकार मनुष्य बहुत परिश्रम करके मोहग्रस्त होकर माया एकत्र करता है, परंतु अंत में वह माया किसी न किसी कारण के चलते उससे छिन जाती है :

माइआ कारनि स्रमु अति करै ॥
सो माइआ लै गाडै धरैं ॥
अति संचै समझै नही मूढ़ ॥
धनु धरती तनु होइ गइओ धूड़ि ॥
(पन्ना १२५२)

भक्त नामदेव जी चेताते हैं कि विषयों से लगाव क्यों ? प्रभु को छोड़कर विषय-वासनाओं में दिल लगाना खुद को धोखा देना ही है :

काएं रे मन बिखिआ बन जाइ ॥
भूलौ रे ठगमूरी खाइ ॥१ ॥रहाउ ॥
जैसे मीनु पानी महि रहै ॥
काल जाल की सुधि नही लहै ॥
जिहबा सुआदी लीलित लोह ॥
ऐसे कनिक कामनी बाधिओ मोह ॥
(पन्ना १२५२)

जैसे मछली जिह्वा के स्वाद के पीछे लोहे के कांटे को लीलकर फंस जाती है, ऐसे ही मनुष्य भी कनक-कामिनी के मोह में बंध कर अपना विनाश करवा लेता है।

भक्त नामदेव जी का आशय स्पष्ट है कि दुनियावी काम अवश्य करो, मगर उनमें फंसो नहीं ! सांसारिक कार्य-व्यवहार निपटाते हुए प्रभु में चित्त लगाये रखो ! प्रभु ही मुक्तिदाता है। सांसारिक वस्तुएं अन्ततः दुख का कारण ही बनती हैं।

इस प्रकार भक्त नामदेव जी ने सहज-साधना के रूप में मनुष्य को मुक्ति का ऐसा द्वार दिखाया है जिसे प्राप्त करना बेहद आसान है। अपना कामकाज करो, लेकिन मन प्रभु में लगाए रखो ! प्रभु स्वयं नदरि (कृपा) करके अपने से मिला लेगा। प्रभु में चित्त लगाओ, मगर ऐसे लगाओ, जैसे भूखा अनाज में और प्यासा पानी में लगाता है :

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥
त्रिखावंत जल सेती काज ॥
जैसी मूड़ कुटंब पराइण ॥
ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥ (पन्ना ११६४)

लासानी शहादत के दीप : बाबा दीप सिंघ जी

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

शहीद बाबा दीप सिंघ जी को साहसी, निडर और शूरवीर योद्धा के तौर पर जाना जाता है। जिस वृद्धावस्था में अनेक व्यक्ति शारीरिक व मानसिक तौर पर अशक्त एवं कमज़ोर हो जाते हैं, उस वृद्धावस्था में बाबा दीप सिंघ जी ने दिखा दिया था कि यदि सच्चे गुरु और सच्चे शबद (गुरबाणी) का दामन थामा जाए, इनमें आस्था रखी जाए, तो बड़ी आयु में भी अदम्य साहस, अद्‌भुत शौर्य की गाथा लिखी जा सकती है, विलक्षण इतिहास का सृजन किया जा सकता है।

शहादत के रौशन चिराग, शस्त्रों और शास्त्रों के धनी, शूरवीर योद्धा, शहादत की पवित्र भावना को अमली जामा पहनाने वाले बाबा दीप सिंघ जी का जन्म १४ माघ, संवत् १७३९ को पिता श्री भगता जी तथा माता जीऊणी जी के घर ज़िला श्री तरनतारन साहिब के गांव पहूविंड में हुआ। बचपन से ही वे सुडौल, सुंदर, ऊंचे कद के और पूर्ण स्वस्थ थे। बड़े होने पर वे श्री अनंदपुर साहिब चले गए। वहां दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेवा में तल्लीन रहने लगे। उन्हें दशम पातशाह जी के हाथों दिव्य अमृत-पान करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी मनोवृत्ति आध्यात्मिक थी। उन्हें गुरु जी ने गुरबाणी-अध्ययन की शिक्षा प्रदान की तथा साथ में शस्त्र-संचालन में भी प्रवीण किया। गुरु जी की कृपा से २०-२२ वर्ष की आयु में ही बाबा जी युद्ध-कला में निपुण होकर वीर योद्धा बन गए। उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा लड़े गए युद्धों में अपनी युद्ध-कला का बाखूबी प्रदर्शन किया। बड़े-बड़े विरोधी योद्धा उनसे भय खाने लगे। उनका नाम सुनकर ही उनके हृदय कांपने लगते थे।

बाबा दीप सिंघ जी उच्च कोटि के विद्वान और अति गुणवान व्यक्ति थे। अपने रहबर, अपने गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का आदेश पाकर उन्होंने तलवंडी साबो श्री दमदमा साहिब में जाकर सिक्खी का प्रचार एवं प्रसार करना शुरू कर दिया। यहीं पर उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन स्वरूप (बीड़) को तैयार किया। तलवंडी साबो रहते हुए उन्होंने भाई मनी सिंघ जी के साथ मिलकर तैयार किए गए पावन स्वरूप के अलावा चार और हस्तलिखित पावन स्वरूप तैयार किए। एक और ऐतिहासिक तथ्य है कि जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दक्षिण भारत की ओर गए, तब वे बाबा दीप सिंघ जी को तलवंडी साबो श्री दमदमा साहिब की सेवा का

**बी-एक्स-९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०*

कार्य सौंप गए थे। बाबा जी यहां पर सिक्खी का प्रचार तथा गुरमति-उपदेश करते हुए सिक्खी के इस केंद्र को चलाते रहे।

अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर अनेक बार आक्रमण किए। उसका रास्ता रोकने वाले, उसकी सेना का व्यापक नुकसान करने वाले तथा उसके नियुक्त किए गए शासकों के अधिकारों को चुनौती देने वाले सिक्खों से वह बहुत दुखी था, परेशान था। वह सिक्खों को कड़ा सबक सिखाना चाहता था। उसने क्रूर, अत्याचारी शासक जहान खान को लाहौर का गवर्नर नियुक्त किया तथा उसे ताकीद की कि वह सिक्खों के अस्तित्व को मिटाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दे।

ज़ालिम जहान खान ने अपने सैनिक जत्थे गांव-गांव भेजकर तथा सिक्खों को ढूंढकर कत्ल करवाना शुरू कर दिया। रणनीति के तहत सिक्ख गांव छोड़कर जंगलों में चले गए। इसी दौरान जहान खान को किसी ने उकसाया कि जब तक श्री अमृतसर में सिक्खों का पवित्र सरोवर एवं श्री हरिमंदर साहिब सुशोभित है, तब तक सिक्ख खत्म नहीं हो सकते। यहां से उन्हें नया जीवन-उत्साह तथा प्रेरणा मिलती है। वे पुनः -पुनः अपने विरोधियों के सिर पर मृत्यु बन मंडराने लगते हैं।

जहान खान ने श्री अमृतसर को अपना मुख्य केंद्र बना लिया और सिक्खों के जज़्बात कुचलने को श्री हरिमंदर साहिब की इमारत को ढहा दिया। पवित्र सरोवर को मिट्टी डाल कर पाट दिया। अब्दाली और जहान खान को क्या पता था कि इस घटना के बाद शूरवीर सिक्ख योद्धा विश्व इतिहास के पन्नों में अपनी लामिसाल शहादतों का एक और सुनहरी पृष्ठ जोड़ने वाले हैं, मानव-इतिहास को नया रूप देने वाले हैं।

श्री हरिमंदर साहिब के हुए असहनीय व अकथनीय अपमान का समाचार जब बाबा दीप सिंघ जी को मिला, तब उनके कोमल हृदय को सदमा पहुंचा, मस्तिष्क में क्रोध व आक्रोश की ज्वाला धधक उठी। सिक्ख पंथ के स्वाभिमान, गौरव व प्रतिष्ठा को बचाने का सवाल था। सच्चाई, निष्ठा, आस्था और धर्म को अहंकारियों, अधर्मियों एवं अत्याचारियों ने चुनौती दी थी। बाबा जी ने उसी समय श्री हरिमंदर साहिब की पवित्रता को आंच व ठेस पहुंचाने वालों के साथ दो-दो हाथ करने का निर्णय किया और आसपास के क्षेत्रों में सिक्खों को सूचना भेज दी। उनके व्यक्तित्व का बहुत ज्यादा प्रभाव था। उनके नेतृत्व में तुरंत सिंघ इकट्ठा होना शुरू हो गए। मालवा क्षेत्र से कूच करते हुए श्री तरनतारन साहिब तक पहुंचने तक खालसा दल के जांबाज़ रणबांकुरों की संख्या पांच हज़ार से अधिक हो गई।

माझा क्षेत्र में दाखिल होने पर बाबा जी की सेना में मझैल सिंघ भी शामिल हो गए। तरनतारन से कुछ दूरी पर आगे जाकर बाबा दीप सिंघ जी ने अपने खंडे (एक शस्त्र) से ज़मीन पर एक लकीर खींची और कहा, ''जो शहादत देने के लिए तैयार है, वही इस लकीर को पार करे!'' उपस्थित सभी सिंघ उस लकीर को पार कर गए।

फिर वे जयकारे गुंजाते हुए श्री अमृतसर की ओर बढ़ने लगे।

श्री अमृतसर की परिधि से पांच मील बाहर गांव गोहलवड़ में जहान खान २० हज़ार सैनिक लेकर सिंघों के साथ युद्ध लड़ने लगा। घमासान युद्ध हुआ। जोश में सिंघों ने ऐसा आक्रमण किया कि जहान खान की सेना के हौसले पस्त होने लगे। उसकी सेना पीछे हटने लगी। सिंघ शस्त्र-कला के जौहर दिखाते हुए शहर के समीप आ गए। इस युद्ध में बाबा दीप सिंघ जी के सहायक भाई दिआल सिंघ ने जहान खान का सिर काटकर उसे मौत के घाट उतार दिया।

इसके बाद पुन: भयंकर युद्ध हुआ। यहां पठानी सेना के दूसरे सेनापति जमाल शाह ने बाबा दीप सिंघ जी को चनौती दी कि वे उसके साथ अकेले मुकाबला करें। बाबा दीप सिंघ जी ने नवयुवक जमाल शाह की चुनौती को स्वीकार किया। इस समय तक शहर की गलियां खून तथा लाशों से भर चुकी थीं। बाबा जी के साथी प्रमुख— भाई धरम सिंघ, भाई खेम सिंघ, भाई मान सिंघ और भाई राम सिंघ भी अन्य अनेक सिंघों सहित शहीद हो गए। बाबा दीप सिंघ जी का शीश धड़ से अलग हो गया, लेकिन उनकी भक्ति की शक्ति का करिश्मा देखिए कि उन्होंने अपना शीश बाएं हाथ की हथेली पर रख लिया और दाएं हाथ से खंडा चलाते हुए दुनिया की एक अद्‌भुत, निराली लड़ाई लड़ी। एक अद्वितीय करिश्मा दिखाते हुए बाबा जी श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा तक जा पहुंचे। यहां तक पहुंचते-पहुंचते अन्य पठान सेनापतियों में से साबिर अली खान, रुस्तम अली खान तथा ज़बरदस्त खान भी मारे गए। इन्हें मारने वाले स्वाभिमानी सिंघ भाई हीरा सिंघ एवं भाई बलवंत सिंघ थे।

जब इतने अधिक सेनापति एक साथ मारे गए, तो पठानी, अफगानी और मुगल फौज के हौसले पूरी तरह से पस्त हो गए। वे सभी श्री हरिमंदर साहिब का घेरा छोड़ भाग खड़े हुए। बाबा दीप सिंघ जी श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में अपने अद्वितीय साहस का पराक्रम दिखाकर, शहादत का दीप जलाकर परम पिता प्रभु के चरणों में विराजमान हो गए। बाकी बचे जांबाज़ सिंघों ने विरोधी सेना का अटारी तक पीछा किया और श्री हरिमंदर साहिब के अपमान का बदला लिया। उन्हें न भूलने वाला सबक सिखाया। उनके जानमाल का बेहद नुकसान किया।

बाबा दीप सिंघ जी के तुल्य वृद्ध व जांबाज़ सेनापति, वीर योद्धा, स्वाभिमानी शूरवीर विश्व इतिहास में कोई दूसरा नहीं है। उनकी लासानी शहादत की मिसाल कहीं नहीं मिलती। ऐसी बे-मिसाल शहादत को शरीर व स्वास्थ्य विज्ञान की कसौटी पर परखा नहीं जा सकता, बल्कि आध्यात्मिक भक्ति, रूहानियत के आलोक में ही ऐसी शहादत के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

ख़बरनामा

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी द्वारा स. पाल सिंघ पुरेवाल के निधन पर शोक व्यक्त

श्री अमृतसर : २७ सितम्बर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बीते दिनों अकाल प्रस्थान कर गए सिक्ख बुद्धिजीवी सरदार पाल सिंघ पुरेवाल के निधन पर शोक व्यक्त किया। एडवोकेट धामी ने सरदार पुरेवाल के परिवार को भेजे लिखित शोक संदेश में कहा है कि सरदार पुरेवाल ने गुरसिक्खी जीवन में विचरण करते हुए पंथक कार्यों में अहम योगदान दिया है। स. पाल सिंघ पुरेवाल विद्वान व्यक्ति थे, जिनका वियोग असहनीय है। उन्होंने कहा कि स. पुरेवाल का निधन परिवार और सिक्ख कौम के लिए बड़ी हानि है। एडवोकेट धामी ने शोक व्यक्त करते हुए अकाल पुरख के चरणों में अरदास की कि वे बिछड़ी रूह को अपने चरणों में निवास प्रदान करें और परिवार को ईश्वरीय आदेश मानने का बल प्रदान करें।

हरियाणा गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी एक्ट रद्द करवाने और पंथ-विरोधी ताकतों के ख़िलाफ़ शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा रोष मार्च आयोजित

श्री अमृतसर : ४ अक्तूबर : अलग हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी एक्ट को रद्द करवाने और पंथ विरोधी ताकतों की सिक्ख मसलों में दखलंदाज़ी के विरुद्ध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा श्री दरबार साहिब से डिप्टी कमिश्नर कार्यालय तक विशाल रोष-मार्च आयोजित कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नाम पर डिप्टी कमिश्नर श्री हरप्रीत सिंघ सूदन को ज्ञापन सौंपा गया। रोष-मार्च का नेतृत्व शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने किया और बड़ी संख्या में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने शिरकत कर पंथक आक्रोश का प्रकटावा किया। इस अवसर पर रोष के तौर पर सबने काली दसतार सजाने के साथ-साथ काली झंडियाँ और आक्रोश भरे नारे लिखी तख्तियां पकड़ी हुई थीं। पंथक जयकारों के साथ आरंभ हुआ यह रोष मार्च जब डिप्टी कमिश्नर कार्यालय पहुँचा, तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने डिप्टी कमिश्नर की अनुपस्थिति में अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर को ज्ञापन सौंपने से इन्कार करते हुए कहा कि जब तक डिप्टी कमिश्नर ख़ुद ज्ञापन लेने नहीं पहुँचते, तब तक रोष-प्रदर्शन जारी रहेगा। इसके पश्चात् शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी के नेतृत्व में

सभी सदस्य साहिबान धरने पर बैठ गए और सतिनाम वाहिगुरु का जाप करना शुरू कर दिया। यह रोष-धरना करीब २ घंटे तक जारी रहा। तत्पश्चात् श्री अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर श्री हरप्रीत सिंघ सूदन ने ख़ुद आकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी से ज्ञापन प्राप्त किया।

धरने के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने अपने संबोधन में कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा हरियाणा के लिए अलग गुरुद्वारा एक्ट-२०१४ को मान्यता देने के कारण सिक्ख जगत में भारी आक्रोश है और यह फ़ैसला सिक्खों की प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को विभाजित करने वाला है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की स्थापना लंबे संघर्ष और कुर्बानियों के बाद हुई है, जबकि सरकारों और सिक्ख विरोधी शक्तियों का ध्यान इसे तोड़ने पर लगा हुआ है। सिक्ख पंथ ऐसे मंसूबों के विरुद्ध सचेत रूप से संघर्षशील है और किसी भी कीमत पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को कमजोर नहीं होने दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि सिक्ख विरोधी ताकतें हमेशा सिक्ख पंथ के मसलों को उलझाने की राह पर चली हुई हैं, जिसे रोकने के लिए सरकारें निष्पक्ष भूमिका नहीं निभा रही। उन्होंने कहा कि सिक्खों के साथ हो रही ज्यादतियों के कारण ही हम बार-बार रोष-प्रदर्शन करने के लिए मजबूर हुए हैं। उन्होंने कहा कि यदि सरकारों ने सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की माँग पर गौर न किया तो भविष्य में संघर्ष का स्वरूप और विशाल किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि आर.एस.एस के हिंदू राष्ट्र एजंडे के अंतर्गत इसके प्रमुख श्री मोहन भागवत की तरफ से भारत में निवास करने वाले हर निवासी को हिंदू कहा जा रहा है, जबकि सरकारें खामोश हैं। सरकारें किसी एक पक्ष की समर्थक नहीं होनी चाहिए। इन्हें देश में निवास करने वाली हर कौम और खासकर अल्पसंख्यकों के पक्ष को अवश्य महत्व देना चाहिए। उन्होंने कहा कि हरियाणा गु. प्र. कमेटी की स्थापना के सम्बन्ध में भी पक्षपाती रवैया अपनाया जा रहा है। पंजाब पुनर्गठन एक्ट- १९६६ के अनुसार सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट-१९२५ अंतरराजीय एक्ट बना होने के कारण इसमें कोई भी संशोधन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सिफारश के साथ केंद्र सरकार ही कर सकती है, परन्तु जानबूझ कर हरियाणा गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बनाने के लिए नियमों का उल्लंघन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस तो शुरू से ही सिक्ख शक्ति को कमज़ोर करने के यत्न करती रही है, अब भाजपा भी उसी रास्ते पर चल कर (अल्पसंख्यक) सिक्खों को दबाने की चालें चल रही है और इसमें आम आदमी पार्टी भी

पीछे नहीं है।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व प्रधान स. अलविंदरपाल सिंघ पक्खोके, वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ (विर्क), कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. सरवण सिंघ कुलार, स. बलविंदर सिंघ वेईंपूईं, स. जरनैल सिंघ डोगरांवाला, स. गुरिंदरपाल सिंघ गोरा, स. अमरजीत सिंघ बंडाला, बीबी गुरप्रीत कौर, सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, भाई अमरजीत सिंघ (चावला), भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), भाई मनजीत सिंघ भूराकोहना, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्ड, एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, भाई राम सिंघ, स. बावा सिंघ गुमानपुरा, स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, स. गुरबचन सिंघ करमूंवाला, बाबा बूटा सिंघ, स. गुरनाम सिंघ जस्सल, स. रविंदर सिंघ खालसा, स. अवतार सिंघ रिआ, स. जगसीर सिंघ मांगेआणा, बीबी जोगिंदर कौर, स. गुरप्रीत सिंघ झब्बर, स. मोहन सिंघ बंगी, स. केवल सिंघ बादल, स. अमरीक सिंघ विछोआ, स. सुरजीत सिंघ तुगलवाल, स. नवतेज सिंघ काउणी, बीबी जोगिंदर कौर धरमकोट, स. खुशविंदर सिंघ (भाटिया), स. गुरमीत सिंघ बूह, स. सतपाल सिंघ तलवंडी भाई, स. बलदेव सिंघ कायमपुर, स. हरभजन सिंघ मसाणा, बीबी हरजिंदर कौर पट्टी, बीबी गुरिंदर कौर भोलूवाल, स. बिकरमजीत सिंघ कोटला, बीबी हरजिंदर कौर चंडीगढ़, बीबी परमजीत कौर लांडरां, बीबी जसवीर कौर जफ्फरवाल, स. बलदेव सिंघ कलिआण, स. सुरजीत सिंघ रायपुर, स. दरशन सिंघ शेरखां, स. अजमेर सिंघ खेड़ा, भाई अजाइब सिंघ अभ्यासी, स. कुलदीप सिंघ तेड़ा, फेडरेशन नेता स. जसबीर सिंघ घुंमण, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान के ओ. एस. डी. स. सतबीर सिंघ (धामी), शिरोमणि कमेटी के अतिरिक्त सचिव स. प्रताप सिंघ, स. सुखमिंदर सिंघ, स. बिजै सिंघ, उप सचिव स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, मैनेजर स. सुलक्खण सिंघ भंगाली, स. गुरिंदर सिंघ, स. गुरमीत सिंघ बुट्टर, स. गुरचरन सिंघ कुहाला, स. सतनाम सिंघ मांगासराए, स. लखबीर सिंघ, स. परमजीत सिंघ सहित बड़ी संख्या में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को तोड़ने के विरुद्ध पंथक आक्रोश तीव्र करने के लिए तीन रोष-मार्च श्री अमृतसर पहुँचे

श्री अमृतसर : ७ अक्तूबर : सिक्ख कौम द्वारा एक सदी पूर्व असंख्य कुर्बानियों द्वारा अस्तित्व में लाए गए सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट- १९२५ की भावना के विपरीत जाकर सुप्रीम कोर्ट की तरफ से हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को मान्यता देने और सिक्खों की गौरवमयी संस्था

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को कमज़ोर करने की साजिशों के विरुद्ध पंथक संघर्ष को तीव्र करने के लिए निश्चित कार्यक्रम के अनुसार तख़्त श्री केसगढ़ साहिब श्री अनंदपुर साहिब, तख़्त श्री दमदमा साहिब तलवंडी साबो और गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब अम्बाला (हरियाणा) से तीन पंथक रोष-मार्च श्री अकाल तख़्त साहिब पर पहुंच कर सम्पन्न हुए। सम्पन्नता के अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब के सम्मुख पंथ की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की चढ़दी कला और संघर्ष की सफलता के लिए अरदास की गई। यह अरदास श्री अकाल तख़्त साहिब के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी मलकीत सिंघ ने की।

इससे पहले विभिन्न पड़ावों को पार कर रोष-मार्च जब स्थानीय गोल्डन गेट के निकट पहुँचे तो भारी संख्या में उपस्थित संगत ने जयकारे गजा कर पंथक जोश का प्रकटावा किया। तीनों रोष-मार्चों के दौरान सैकड़ों की संख्या में गाड़ियों का काफ़िला शामिल था, जिसमें हज़ारों की संख्या में संगत मौजूद थी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा आयोजित किये गए इन रोष-मार्चों में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों और अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ-साथ शिरोमणि अकाली दल के उच्च पदाधिकारियों सहित कार्यकर्त्ताओं ने भी भाग लिया।

तख़्त श्री केसगढ़ साहिब से पहुँचे पंथक रोष-मार्च का नेतृत्व शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी कर रहे थे, जबकि तख़्त श्री दमदमा साहिब से चले रोष-मार्च का नेतृत्व शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल ने किया। इसके अलावा हरियाणा से पहुँचे रोष-मार्च में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ (विर्क) के नेतृत्व में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य और संगत शामिल थी। रोष-मार्चों के श्री अकाल तख़्त साहिब पर पहुँचने पर रागी जत्थों ने गुरबाणी-कीर्तन किया और इसके बाद सम्पन्नता की अरदास हुई।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को कमज़ोर करने के लिए पंथ-विरोधी शक्तियों व सरकारों के विरुद्ध सिक्ख धर्म में भारी आक्रोश है, जो आज रोष-मार्च के दौरान नज़र आया है। उन्होंने कहा कि अलग-अलग स्थानों से चले ये रोष-मार्च पड़ाव-दर-पड़ाव और बड़े होते गए तथा इनका प्रत्येक क्षेत्र में भरपूर स्वागत हुआ। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इस संघर्ष की प्राथमिक रूप-रेखा के अंतर्गत पंथक रोष प्रकट किया है, जबकि भविष्य में इस रोष को और तीव्र किया जायेगा, ताकि सरकारों के कानों तक पंथक आवाज़ पहुंचायी जा सके। एडवोकेट धामी ने कहा कि जानबूझ कर सिक्खों की प्रतिनिधि संस्था

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को पंथ-विरोधी ताकतों द्वारा निशाने पर लिया जा रहा है, जिसे बरदाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सिक्ख पंथ देश के लिए हमेशा लड़ता तथा कुर्बानियां करता आया है और कौम का यह भी इतिहास है कि जब भी इसे किसी ने चुनौती दी तो इसने लामबंद होकर मुँहतोड़ जवाब दिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने स्पष्ट लफ़्ज़ों में कहा कि सरकारें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को तोड़ने में सीधे तौर पर दख़ल दे रही हैं, जिसके विरुद्ध सिक्ख पंथ हर मंच पर आवाज़ बुलंद करता रहेगा। उन्होंने रोष-मार्च के दौरान सहयोग करने पर शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल सहित पंथक शख़्सियतों, जत्थेबंदियों और संगत का धन्यवाद किया।

इस दौरान शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल ने कहा कि सिक्ख कौम के दुश्मनों के विरुद्ध संघर्ष हेतु ताकत प्राप्त करने के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब के सम्मुख होकर अरदास की गई है और गुरु साहिब अवश्य सफलता प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को तोड़ने के लिए पंथ-विरोधी ताकतों ने बड़ा हमला किया है, इसलिए खालसा पंथ इसका एकजुट होकर विरोध करता रहेगा। स. बादल ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी देश की आज़ादी से पहले स्थापित हुई वह सिक्ख संस्था है, जिसने इस देश को आज़ाद करवाने में संघर्ष की बुनियाद रखी थी। आज देश की सरकारें ही इसे निशाना बना रही हैं। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी केवल गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध ही नहीं करती, बल्कि देश में आई हर आपदा के समय मानवता की भलाई के लिए भी यत्नशील रहती है। उन्होंने कहा कि इस प्रतिनिधि सिक्ख संस्था के कार्य और प्राप्तियाँ पंथ-विरोधी शक्तियों एवं सरकारों को हज़म नहीं हो रही, इसलिए सभी इकठ्ठा होकर सिक्ख पंथ की ताकत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को तोड़ने के मंसूबे बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को तोड़ने की साजिश में सिक्खों की दुश्मन जमात कांग्रेस के साथ-साथ भारतीय जनता पार्टी और आम आदमी पार्टी भी शामिल है। उन्होंने सिक्ख पंथ से अपील की कि अपनी संस्थायों, रिवायतों, इतिहास, परंपराओं और सिद्धांतों पर चोट करने वाली ताकतों के विरुद्ध लामबंद होकर एकजुट आवाज़ बुलंद की जाये, ताकि इन्हें सिक्ख मसलों में दख़ल देने से रोका जा सके। उन्होंने कहा कि शिरोमणि अकाली दल शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के संघर्ष में हर स्तर पर सहयोग करेगा और गाँव स्तर पर लोगों को लामबंद भी करेगा।

एको है करतार!

तेरे नाम के नूर से है, रौशन सारा संसार!
सबको यह समझाया तुमने, एको है करतार!

जिस दिन बाबे ने मस्ती में, धुर की बाणी गाई।
भाई मरदाना जी ने भी, संगत खूब निभाई।
सतिनाम श्री वाहिगुरु और, जपाया एक ओअंकार।
तेरे नाम के नूर से है, रौशन सारा संसार!

शबद-ज्ञान की ज्योति जला कर, नफ़रत की धुंध मिटाई।
किरत करो और नाम जपो, वंड छको की बात सिखाई।
'तेरा-तेरा' तौल के सबके, भर दिए भंडार।
तेरे नाम के नूर से है, रौशन सारा संसार!

जब बाबा जी चलते-चलते, पहुंच गए बगदाद।
मुल्ला और काजियों से भी, खूब हुए संवाद।
ठोस दलीलें देकर किए, दूर भ्रम के भार।
तेरे नाम के नूर से है, रौशन सारा संसार!

जुल्म किसी पर ठीक नहीं, यह जाबर को समझाया।
तर्क-वितर्क से एक दिन आपने, बाबर को हराया।
कौडा भील जैसों का भी, तोड़ दिया अहंकार।
तेरे नाम के नूर से है, रौशन सारा संसार!

गुरबाणी में आपने रख दी, कुछ ऐसी तासीर।
बाणी पढ़कर बदल सकते हैं, सब अपनी तक़दीर।
पढ़ के देखो जपु जी साहिब या आसा की वार!
तेरे नाम के नूर से है, रौशन सारा संसार!

जो फरमाया गुरु ने वो, याद रखो तुम पल-पल!
गुरु ग्रंथ की बाणी मन को, कर देती है निर्मल।
'फ़लक' सच्ची गुरबाणी की है, महिमा अपरंपार।
तेरे नाम के नूर से है, रौशन सारा संसार!
सबको यह समझाया तुमने, एको है करतार!

-डॉ. जसप्रीत कौर फ़लक
11, गुरु ज्ञान विहार, फेज 1, डुगरी, लुधियाना, फोन : 96468-63733

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN November 2022

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा सीसगंज साहिब पातशाही नौवीं (दिल्ली)

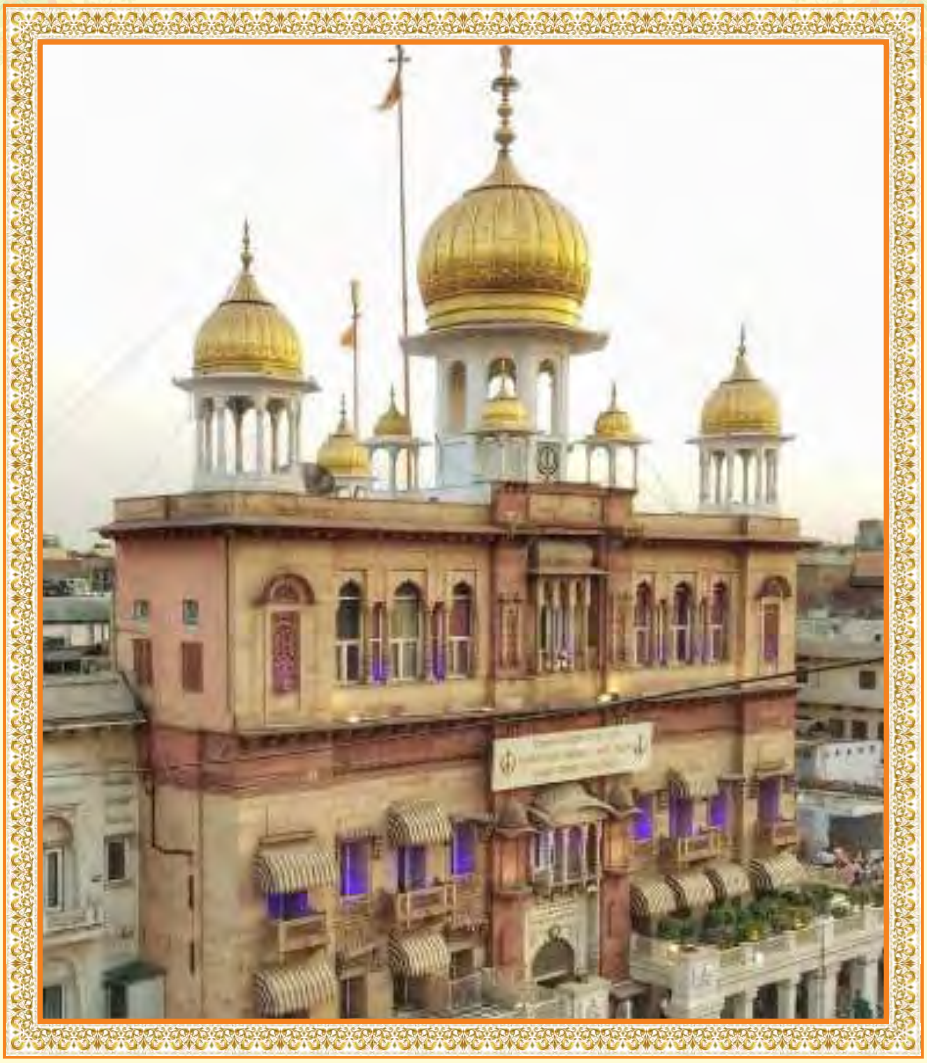

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh

Date: 7-11-2022